वर्ग - VII + IX A (N.R.B.)

1. हम पंछी उन्मुक्त गगन के

कवि - शिव मंगल सिंह 'सुमन'

शब्दार्थ — उन्मुक्त = आजाद, पिंजरबद्ध = पिंजरे में बंद, कनक-तीलियों = सोने की छड़ें ; सलाखें, पुलकित = कोमल, कटुक = कड़वा, निबौरी = नीम का फल, स्वर्ण-शृंखला = सोने की जंजीरें, फुनगी = पेड़ का सबसे ऊपरी भाग, अरमान = इच्छा, सीमा = सरहद, तारक = तारों वाले, सीमाहीन = सीमा के बीना, क्षितिज = जहाँ धरती और आकाश मिले हुए दिखाई पड़ते हैं, होड़ा-होड़ी = एक दूसरे से आगे निकल जाने की स्पर्धा, साँसों की डोरी तनना = मृत्यु को प्राप्त करना, नीड़ = घोंसला, आश्रय = सहारा, छिन्न-भिन्न = बर्बाद करना, तोड़ देना, आकुल = बेचैन, विघ्न = बाधा।

व्याख्या —

इस कविता में कवि ने पक्षियों के माध्यम से स्वतंत्र जीवन जीने की भावना को व्यक्त किया है।

पक्षी कहते हैं कि खुले गगन में उड़ने वाले हम आजाद पक्षी पिंजरे में कैद होकर अपना मधुर गान नहीं गा सकेंगे, भले ही वह पिंजरा सोने का ही क्यों न बना हो। हमारे कोमल पंख पिंजरों में लगे, इन सोने की छड़ों से टकराकर टूट जाएँगे।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

नदियों, झरनों का बहता हुआ पानी पीने वाले हम पक्षी पिंजरे में कैद होकर भूख-प्यास से मर जाएँगे। हमारे लिए सोने की कटोरी में रखे हुए मैदा से बेहतर कड़वी निबोरी है।

इन पंक्तियों में कवि का यह भाव है कि पिंजरे में कैद होकर सोने की कटोरी में खाने-पीने की अपेक्षा पक्षियों का स्वतंत्र होकर आसमान में उड़ना अधिक प्रिय है।

पक्षी कहते हैं कि सोने की इन जंजीरों में बँधकर हम अपनी स्वभाविक चाल, उड़ने के ढंग सब भूल गये हैं। पेड़ों के सबसे ऊपरी भाग पर बैठ कर मजे के साथ झूलना, अब तो हमारे लिए सपनों की बात बन कर रह गई है।

इस बंधन में पड़ने से पहले मेरी इच्छा थी कि हम खुले आसमान के अंत तक अपनी उड़ान भरें तथा सूर्य के लाल किरणों के समान अपनी चोंच खोलकर तारे रूपी अनार के दाने चुगते रहें।

पक्षी कहते हैं कि जबवे असीमित आसमान में उड़ने के लिए पंख फैलाते हैं तो उनके दोनों पंखों में आपस में एक-दूसरे से

आगे निकल जाने की प्रतिस्पर्धा शुरू हो जाती है। इस प्रतिस्पर्धा के दौरान या तो वे उस स्थान पर पहुँच जाते हैं जहां धरती और आकाश मिलते हुए नजर आते हैं या उस स्थान को पाने के लिए अपनी जान दे देते हैं।

पक्षियों का कहना है कि बेशक उन्हें रहने के लिए घोंसला न दिया जाए जो उन्हें डाली का सहारा मिला है, उसे भी भले ही तोड़ दिये जाये, उड़ना न सीख लें तबतक हमें घर न बदलना पड़े, लेकिन घर छोड़ना फिर भी अनिवार्य हुआ तो उस घर में आने वाले नये परिवार से हम आग्रह करेंगे कि वे हमारे घोंसलों को वही बना रहने दें। पक्षियों को छेड़े नहीं तथा उनका ध्यान रखें। बच्चा बड़ा होने पर वे स्वयं ही वहाँ से चले जाएँगे।

प्रश्नोत्तर →

① 'हम पक्षी उन्मुक्त गगन के' पाठ के रचयिता निम्न में से कौन है?

(क) रामधारी सिंह 'दिनकर'
(ख) शिवमंगल सिंह 'सुमन'
(ग) महादेवी वर्मा
(घ) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

उत्तर → (ख)

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(ii) पक्षी कहाँ का जल पीना पसंद करते हैं ?

(क) सागर का पानी
(ख) नदी एवं झरने का बहता पानी
(ग) पिंजरे में रखे कटोरी का पानी
(घ) तालाब का पानी

उत्तर — (ख)

(iii) पक्षी अपना मधुर गान कब नहीं गा पायेंगे ?

(क) पिंजरों के बाहर रहकर
(ख) पिंजरे से उड़कर
(ग) पिंजरे के पास रहकर
(घ) पिंजरे में बंद होकर

उत्तर — (घ)

(iv) पक्षियों की अभिलाषा क्या थी ?

(क) आकाश की सीमा तक उड़ना
(ख) मीठे फल खाना
(ग) आकाश में गीत गाना
(घ) बनक-कटोरी में भोजन करना

उत्तर — (क)

(v) पक्षियों के लिए पिंजरे में रखे मेवा से बेहतर निम्न में से क्या है ?

(क) आम का फल
(ख) जंगल के मीठे फल
(ग) नीम का फल
(घ) खेत के अनाज

उत्तर — (ग)

(vi) पक्षी कैसा जीवन जीना चाहते हैं ?

उत्तर — पक्षी एक स्वतंत्र जीवन जीना चाहते हैं। वह अपनी इच्छानुसार उड़ना एवं गाना चाहते हैं।

(vii) पक्षियों के सपने एवं अरमान क्या हैं ?

उत्तर - पक्षियों का सपना है कि वे वृक्ष की सबसे ऊँची चोटी पर बैठकर झूला झूलें। उनका अरमान है कि उड़कर आकाश की सीमा तक पहुँच जाएँ। इस प्रयास में क्षितीज सीमा तक पहुँच जाएँ या अपने प्राण का त्याग कर दें।

(viii) पिंजरे में पक्षियों के कौन-कौन से कष्ट हैं ?

उत्तर - पिंजरे में पक्षी फुदक नहीं सकते, अपनी पंख नहीं फैला सकते, अपनी इच्छानुसार उड़ नहीं सकते, पिंजरे में उन्हें नदियों और झरनों का बहता हुआ जल पीने को नहीं मिलता। वृक्षों पर लगे कड़वे-मीठे फल खाने को नहीं मिलते। पिंजरे में पक्षियों को वह वातावरण नहीं मिलता, जिसमें रहने के वे आदि हैं।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(9) पक्षी हमसे क्या चाहते हैं ?

उत्तर - पक्षी हमसे अपने उड़ने का अधिकार चाहते हैं। वह इसके बदले अपना घोंसला एवं टहनी का अपना आश्रय भी देने को तैयार हैं। विनय पूर्वक कहते हैं कि जब ईश्वर ने उन्हें पंख दिए हैं तो मानव उनकी उड़ान में विघ्न न डाले और उन्हें उन्मुक्त रूप से उड़ने दें।

(x) इस कविता में पक्षियों के माध्यम से क्या संदेश दिया गया है ?

उत्तर - इस कविता में पक्षियों के माध्यम से स्वतंत्रता के महत्त्व को दर्शाया गया है। स्वतंत्रता सबको प्रिय लगती है। स्वतंत्र रहकर ही अपने सपने और अरमान पूरे किये जा सकते हैं, पराधीनता में सारी इच्छाएँ दबी रह जाती हैं। अपनी मूलभूत आवश्यकता के लिए भी दूसरे पर निर्भर होना पड़ता है। कोई भी व्यक्ति पराधीन रहना नहीं चाहता। इस कविता से यह ज्ञात होता है कि पक्षी भी यही चाहते हैं। उन्हें पिंजरे में रहकर उसी प्रकार का कष्ट होता है, जैसे हमें कारागार में कष्ट अनुभव होता है। अतः पक्षियों को स्वतंत्र रूप से खुले आसमान में विचरण करने देना चाहिए उनके उड़ान में बाधा नहीं डालनी चाहिए।

2. दादी माँ

लेखक - शिवप्रसाद सिंह

शब्दार्थ - कठिनाई = संकट, सदा = हमेशा, अनमना = उदास, शुभचिंतक = हितैषी, सूचना = खबर, प्रतिकूलता = स्थिति अनुकूल नहीं, मजाक = उपहास, बरबस = अचानक / जबरदस्ती, शीत-शीतल, क्वार = भारतीय कैलेन्डर के अनुसार बरसात का आखिरी महीना, सिवान = गाँव की सीमावर्ती भूमि, अधगली = आधी गली हुई, विचित्र = अजीब, गंधपूर्ण = बदबूदार, कुड़क = वियोग से दुःखी, स्नेह-सने = प्रेम से लथपथ, सद्यः = अभी-अभी, सरसाम-मूर्छा, विशूचिका = हैजा, कुनैन = दवाई का नाम, तिताई = कड़वाहट, जी = मन, उत्साह = उमंग, सर पर उठा लेना = शोरगुल करना, कार-परोजन = अनेक तरह के कार्य जैसे, शादी-विवाह। विलंब = देरी, निकसार = निकलने का रास्ता, बिगड़ना = गुस्सा होना, मयसूद-ब्याज सहित, शरम = लाज, नाक रगड़ना = खुशामद करना, पाई = सिक्का, खातिर = लिए, निस्तार = छुटकारा, अप्रिय = अरूचिकर, प्रसंग = प्रकरण, विह्वल = अत्यंत खुश, उरिन = कर्जमुक्त, हँसाई न होना = बेइज्जती न होना, तर्क = दलील, रोज = प्रत्येक दिन, अभिनव-नाटक, पुत्रोत्पत्ति = पुत्र उत्पन्न होना, पार्ट = रोल, दालान = बरामदा, आपत्ति = असहमति, भेद = राज, अभयदान = भयरहित

वात्याचक्र = बवंडर, वायुचक्र, धोखे की टट्टी = माया जाल, श्राद्ध = पितरों की प्रसन्नता हेतु श्रद्धा से किया जाने वाला कार्य, अतुल = असीमित, स्नेह-कातर = प्रेमयुक्त, मन मारना = इच्छाओं को दबाना, चारा = रास्ता, गला भर आना = व्याकुल होना, सहेज कर = सावधानी से, सँभालकर, वंश = खानदान, आशा-पीड़ा = शुभ-अशुभ, विलीन = अदृश्य, घिनौनी = घृणा योग्य, पाँखें = पंख, धूमिल = क्षीण, कमजोर।

प्रश्नोत्तर —

(1) लेखक को अपनी दादी माँ की याद के साथ-2 बचपन की और किन बातों की याद आ जाती है?

उत्तर — लेखक को अपनी दादी माँ के साथ-2 गाँव और परिवार की अनेक बातें याद आती हैं, जो निम्नप्रकार हैं —

(क) क्वार के दिनों में जलाशय के झागदार पानी में कूदकर नहाना।

(ख) आषाढ़ में आम-जामुन, अगहन में चिउड़ा गुड़, चैत में लाई तथा गुड़ खाना।

(ग) बीमार होने पर दादी की स्नेहपूर्ण देखभाल करना।

(घ) किशन भैया की शादी में औरतों का अभिनय चोरी से देखना।

(ङ) दादी माँ के मुचीकत के दिनों में पिताजी को सांत्वना देना।

(ii) दादा के मृत्यु के बाद लेखक के घर की आर्थिक स्थिति खराब क्यों हो गई?

उत्तर - श्राद्ध में लेखक के पिता ने दादी माँ के मना करने के बावजूद अतुल सम्पत्ति व्यय की। यह संपत्ति घर की नहीं थी, कर्ज में ली गई थी। अनुभवहीनता के कारण हुई इस गलती से लेखक के घर की आर्थिक स्थिति खराब हो गयी थी।

(iii) दादी माँ के स्वभाव का कौन सा पक्ष आपको सबसे अच्छा लगता है और क्यों?

उत्तर - दादी माँ के स्वभाव में कई पक्ष थे, जो अच्छे लगते थे, जैसे वह स्नेह, ममता तथा त्याग की मूर्ति थीं। वह भावुक तथा कोमल स्वभाववाली थी, पर मुझे उनके स्वभाव का सबसे अच्छा पक्ष - दूसरों की मदद करना, लगता है। समय-असमय वे पैसे देकर दूसरों की मदद करती, पैसे वापस न मिलने पर डाँटती पर दयावश उसका कर्ज माफ कर पुनः उसकी मदद कर दिया करती थी।

(iv) दादी माँ ने अपने अनुभव से बीमारियों के उपचार के संबंध में काफी जानकारी एकत्र कर ली थी। इस विषय में विस्तार से बताएँ।

उत्तर - बूढ़ी दादी माँ गाँवों में प्रयोग

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

की जानेवाली दवाओं की पचासों किस्म के नाम याद थे। वह भूत से लेकर मलेरिया, सरसाम तथा निमोनिया के लक्षणों के विषय में भी जानती थीं। महामारी तथा विशूचिका फैलने पर सफाई का बड़ा ध्यान रखती। दवा में देर होने पर या चादर-गिलाफ न बदले जाने पर क्रोधित हो जाया करती थीं।

(v) देबू की माँ ने लेखक से हाथापाई क्यों शुरू कर दी?

उत्तर – किशन भैया की बारात चले जाने के बाद रात में स्त्रियों के अभिनय का कार्यक्रम था। लेखक चादर ओढ़कर दालान में सोया था लेकिन वास्तव में वह सबकी नजर बचाकर अभिनय का मजा ले रहा था, उसी समय भाभी की कही बात पर उसकी हँसी रुक न सकी। बस, देबू की माँ ने चादर खींच ली और उसे भगाने के लिए हाथापाई शुरू कर दी।

(vi) बचपन की बीमारी और अब की बीमारी में लेखक क्या अंतर महसूस करता है?

उत्तर – बचपन में लेखक बीमार पड़ता था तो दादी माँ स्नेह से उसकी देख-रेख करतीं। रातभर चारपाई के पास बैठकर कभी पंखा डुलाती, कभी लेप करती तो कभी हाथ-पैर सहलाती। बड़े ध्यान से वह बीमार

में खाने-पीने वाले विशेष व्यंजन बनवातीं। आज जब लेखक बीमार पड़ता है तो नौकर पानी दे जाता है और महाराज खिचड़ी पकाकर देते थे, डॉक्टर आकर नाड़ी देखते हैं तथा उनकी दवा के डर से बुखार भी भाग जाता है। लेकिन दादी माँ की वह स्नेहपूर्ण देखभाल अब नहीं मिलती है। यही कारण है कि लेखक अब बीमार नहीं पड़ना चाहता है।

(vii) रामी की चाची दादी माँ को क्या आशीष दे रही थी और क्यों?

उत्तर – रामी की चाची दादी माँ को 'पूतों फलो दूधो नहाओ' का आशीष दे रही थी क्योंकि दादी माँ ने उसका सारा कर्ज माफ कर दिया था।

(viii) दादाजी के दिये कंगन दादी माँ के लिए क्या महत्त्व रखते थे?

उत्तर – दादाजी के दिये कंगन दादी माँ के लिए बहुत महत्त्व रखते थे क्योंकि उनकी भावनाएँ एवं आस्था उस कंगन से जुड़ी हुई थी, वह उनके वंश की निशानी थी। वह वर्षों से उन्हें सहेजकर रखती आई थीं, यही कारण था कि जब उन्हें प्रतीत हुआ कि कंगन देना पड़ेगा तो उनका मन दुःख से भर उठा।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

बहुवैकल्पिक प्रश्न

(i) लेखक जब उदास होता था, तब उसके सामने किसकी छाया नाच उठती है ?
(क) माँ की (ख) पिताजी की
(ग) दादाजी की (घ) दादी माँ की ।
उत्तर - (घ)

(ii) पाठ में बच्चे किस महीने में झाग दार पानी में नहाते थे ?
(क) आषाढ़ (ख) क्वार
(ग) सावन (घ) भादो
उत्तर - (ख)

(iii) लेखक तालाब के झागदार पानी में नहाने का अधिक मजा नहीं ले सका, क्यों,
(क) पानी बदबूदार होने के कारण
(ख) डूबने के डर के कारण
(ग) बीमार होने के कारण
(घ) दादी माँ के मना करने के कारण
उत्तर - (ग)

(iv) नहाकर लौटी दादी माँ लेखक के सिर क्या लाई थी ?
(क) पूजा के फूल (ख) मंदिर का प्रसाद
(ग) किसी चबूतरे की मिट्टी (घ) अदृश्य शक्तिमयी
उत्तर - (ग)

(v) बीमारी के समय दादी माँ - - का विशेष ध्यान रखती थी ?
(क) दवाईयों का (ख) सफाई का
(ग) आराम का (घ) झाड़ - फूँक का
उत्तर - (ख)

2. हिमालय की बेटियाँ

लेखक - नागार्जुन

शब्दार्थ - गंभीर = संजीदा, संभ्रांत = सभ्य, धनी, भाँति = तरह, जैसा, प्रतीत होना = दिखलाई पड़ना, श्रद्धा = विश्वास, हैरान = आश्चर्यचकित, समतल = बराबर पृष्ठ वाला, भंगी = स्थिति, कौतूहल = जिज्ञासा, विस्मय = आश्चर्य, लक्ष्य = उद्देश्य, अतृप्त = प्यासा, जली = जलयुक्त, अधित्यकाएँ = पहाड़ी के ऊपर का समतल भाग, सरसब्ज = हरी - भरी, उपत्यकाएँ = तराई / घाटी, सिर धुनना = पछताना, श्रेय = सौभाग्य, विरही = वियोगी, प्रतिदान = वापस करना, प्रेयसी = प्रेमिका, सचेतन = चेतनायुक्त, रूपक = रूप से युक्त, जुदा - जुदा = अलग-2, हर्ज = नुकसान, प्रगतिशील = आगे की ओर बढ़ते हुए, लीला = रहस्यमय कार्य, मुदित = प्रसन्न, खुमारी = सुस्ती, बलिहारी = कुर्बान होना, नटी = नाटक की अभिनेत्री, पट = परदा, अनुपम = अद्वितीय, अद्भुत = विचित्र, छाप = प्रभाव.

प्रश्नोत्तर

(i) नदियों को माँ मानने की परंपरा हमारे यहाँ काफी पुरानी है, लेकिन लेखक नागार्जुन उन्हें और किन रूपों में देखते हैं ?
उत्तर :- भारतीय संस्कृति में नदियों को माता कहा गया है, अपने इस

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

निबंध में लेखक नागार्जुन नदियों को बेटी, प्रेयसी तथा बहन के रूप में चित्रण किया है। लेखक ने पर्वतराज की गोद में नदियों की चंचलता देखकर उन्हें हिमालय की पुत्रियाँ कहा है। नदियाँ बादलों की प्रेमिका है उनसे वर्षा का उपहार पाकर ये प्रसन्न हो जाती हैं तथा अपने उफान पर आ जाती हैं। लेखक नदियों को बहनभी कहा है क्योंकि उनके किनारे पर बैठ कर वह अपनी समस्याओं को सुलझा लेते हैं।

(ii) सिंधु और ब्रह्मपुत्र की क्या विशेषता बतायी गई है?

उत्तर:- लेखक ने सिंधु और ब्रह्मपुत्र की विशेषता बतलाते हुए लिखा है कि ये दोनों नदियाँ हिमालय पर्वत से निकलती हैं। दयालु हिमालय के पिघले हुए दिल की एक-एक बूँद न जाने कब से इकट्ठा होकर इन दोनों महानदों के रूप में समुद्र की ओर प्रवाहित होती रही है। समुद्र भी इन्हें अपनाने पर अपने-आपको सौभाग्यशाली समझता है।

(iii) काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता क्यों कहा है?

उत्तर - नदियों ने युगों से एक माता की भाँति सभी जीवित प्राणियों का पोषण

किया है। मानव सभ्यता के विकास में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। नदी के किनारे ही मानव ने अपनी पहली बस्ती बसायी और खेती करना शुरू किया। नदियों के जल ने सिंचाई तथा भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आधुनिक युग में पनबिजली परियोजनाएँ नदियों पर ही निर्भर है। इतना ही नहीं सदियों से नदियाँ गाँवों और शहरों की गंदगी भी अपने साथ बहाकर ले जाती रही हैं, फिर भी वे हमारे लिए कल्याणकारी है। यही कारण है कि काका कालेलकर ने उन्हें लोकमाता कहा है।

(iv) हिमालय की यात्रा में लेखक ने किन-किन की प्रशंसा की है?

उत्तर - हिमालय की यात्रा के दौरान लेखक नागार्जुन ने रावी, सतलुज, व्यास, चिनाब, झेलम, काबुल, कपिशा, गंगा, यमुना, सरयू, गंडक, कोसी आदि नदियों की प्रशंसा की है। इसके अलावा लेखक ने हिमालय पर्वत, समुद्र, बर्फीली चोटियों, पर्वतों, मैदानों आदि की भी प्रशंसा की है।

(v) मैदानों में नदियों के रूप और स्वभाव में क्या परिवर्तन दिखाई देता है और क्यों?

उत्तर - मैदानों में नदियाँ माता का रूप धारण कर लेती हैं। उनके स्वभाव में

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

गंभीरता आ जाती है। वह शांत और अपने-आप में खोयी सी दिखाई देती है। पहाड़ों पर दुबली-पतली दिखने वाली नदियाँ मैदानों में उतरकर विकराल रूप धारण कर लेती हैं। यह परिवर्तन इसलिए होता है क्योंकि उनपर जगत-पालन का दायित्व होता इतने बड़े दायित्व को संभालने के लिए बाल स्वभाव का त्याग करना ही पड़ता है।

(vi) लेखक ने समुद्र को सौभाग्य-शाली क्यों कहा है?

उत्तर - हिमालय की सभी बेटियाँ उसका आँगन छोड़कर समुद्र का हाथ थाम लेती हैं। अर्थात् हिमालय से निकलने वाली सभी नदियों की यात्रा समुद्र तक पहुँचकर ही समाप्त हो जाती है, इसलिए लेखक ने समुद्र को सौभाग्य शाली कहा है क्योंकि उसे पर्वतराज हिमालय की बेटियों का हाथ पकड़ने का सौभाग्य मिला है।

(vii) हिमालय से निकलने वाली प्रमुख नदियों के नाम लिखें तथा बताएँ कि लेखक ने उनके अस्तित्व के विषय में क्या कहा है?

उत्तर:- हिमालय से निकलने वाली प्रमुख नदियाँ, जैसे - सिंधु, ब्रह्मपुत्र, रावी, व्यास, चेनाब, झेलम, काबुल, सतलुज,

गंगा, यमुना, सरयू, गंडक, कोसी आदि हैं। लेखक कहता है कि इन नदियों का अपना कोई अस्तित्व नहीं है। वास्तव में ये हयालु हिमालय के पिघले हुए हिम की बूँदें हैं, जिन्होंने एकत्र होकर नदी का रूप धारण कर लिया है। तथा समुद्र की ओर बहती हुई चली जा रही है। लेखक के कहने का यह अर्थ है कि हिमालय पर जमी हुई बर्फ के पिघलने से ही नदियों का जन्म होता है। हिमालय के बिना इन नदियों का कोई अस्तित्व नहीं है।

(viii) लेखक के हृदय में नदियों को बहन मान लेने की भावना कैसे उत्पन्न हुई?

उत्तर - तिब्बत के थो-लिङ् की घटना है। लेखक का मन उचट गया था, उनकी तबियत कुछ ढीली हो गयी थी। दोपहर के समय वह सतलुज के किनारे जाकर बैठ गये और पानी में पैर लटका दिया। नदी के प्रवाहशील जल का असर थोड़ी ही देर में दिखने लगा। लेखक का मन तरोताजा हो गया और उसने सतलुज को बहन मानकर उनके ऊपर एक कविता लिख डाली, क्योंकि वह बहन ही होती है जो पलक झपकते भाई की समस्याएँ सुलझा देती है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(ix) लेखक द्वारा लिखी कविता का सार लिखिए।

उत्तर - लेखक द्वारा लिखी कविता में सतलज बहन का गुणगान किया गया है, उसकी जयकार करते हुए लेखक लिखता है कि तुमसे मेरा हृदय प्रसन्न हुआ और सारी खुमारी हट गयी। मैं तुम पर बलिहारी हूँ। तुम हिमालय की पुत्री हो। तुम्हारा पिता हिमालय तुम्हारे लिए चिंतित है, परन्तु चुप है। वह महान हिमालय प्रकृति रूपी अभिनेत्री के प्रांगण में अपनी अद्भुत छटा बिखेर रहा है। हे, सतलुज बहन! तुम्हारी जय हो।

(x) 'हिमालय की बेटियाँ' किन्हें कहा गया है?

(क) वनस्पतियों को (ख) बर्फ की चादर को

(ग) चोटियों को (घ) नदियों को

उत्तर - (घ)

(xi) लेखक ने मैदानी इलाकों की नदियों को किसके समान बताया है?

(क) नवयौवना के समान (ख) बालक के समान

(ग) संभ्रांत महिला के समान (घ) वृद्धा के समान

उत्तर - (ग)

(xii) नदियाँ कहाँ अठखेलियाँ करती हुई दिखाई पड़ती हैं?

(क) हिमालय की गोद में (ख) मैदानों की गोद में

(ग) सागर की गोद में (घ) घाटियों की गोद में

उत्तर - (क)

(xiii) लेखक को लगता है कि नदियाँ अपने महान पिता का विराट प्रेम पाकर भी --- हैं।

(क) संतुष्ट (ख) तृप्त

(ग) अतृप्त (घ) प्रसन्न

उत्तर - (ग)

(xiv) लेखक ने नदियों का एक अलग रूप कब देखा?

(क) जब वह मैदान में गया

(ख) जब वह सागर तट पर गया

(ग) जब वह रेगिस्तान में गया

(घ) जब वह हिमालय की यात्रा पर गया।

उत्तर - (घ)

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

4 कठपुतली

कवि - भवानीप्रसाद मिश्र

शब्दार्थ - कठपुतली = डोरे से बँधकर नचाये जानेवाली काठ की पुतली, गुस्से से उबलना = अत्यधिक क्रोध में होना, पाँवों पर कूदना = मुक्त करना, मन के द्वंद = भाव विचार, इच्छा = चाह, कामना, जगी = जाग जाना, सचेत होना।

व्याख्या =

प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ 'वसंत भाग-2' में संकलित 'कठपुतली' नामक कविता से ली गई हैं। इसके रचयिता भवानी प्रसाद मिश्र हैं।

इस कवितांश में कवि ने कठपुतलियों की स्वतंत्रता की इच्छा एवं आत्मनिर्भरता की भावना को व्यक्त किया है।

कवि का कहना है कि कठपुतलियाँ लंबे समय से पराधीन होकर जी रही हैं। उनके मन में स्वतंत्रता की अभिलाषा जाग उठी है। अपनी पराधीनता को देखकर एक कठपुतली गुस्से से भर उठती है तथा कहती है कि हमारे आगे-पीछे इतने सारे धागे क्यों हैं, अर्थात् हमें बंधनों में क्यों रखा गया है? क्यों हम पराधीन जीवन जीने को विवश हैं? वह बंधन मुक्त होना चाहती है और स्वतंत्र होकर अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती है। उसके स्वर में विद्रोह है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

कवि का कहना है कि पहली कठपुतली की बात सुनकर अन्य कठपुतलियाँ भी कहने लगीं- हाँ, कई दिनों से हम बंधन में पड़ी हुई थीं। हम भी आजादी चाहती हैं। हम भी अपने भावों-विचारों को पूर्ण रूप से व्यक्त करना चाहती हैं।

कवि का कहना है कि पहली कठपुतली सोचने लगती है कि उसके मन में आजाद होने के भाव कैसे पैदा हुए? मेरे मन में कैसी कामना जाग रही है? क्या मैं वास्तव में आजाद होना चाहती हूँ? क्या अन्य कठपुतलियों को आजाद करवाने की जिम्मेदारी मेरी है? अतः मुझे हर कदम सोच-समझकर उठाना जरूरी हो गया है।

प्रश्नोत्तर -

(i) कठपुतली को गुस्सा क्यों आया?
उत्तर - कठपुतली के आगे पीछे धागे ही धागे थे। ऐसा जीवन उसे लंबे समय से जीना पड़ रहा था। अपनी स्वतंत्रता की चेतना जागृत होने पर कठपुतली को गुस्सा आया।

(ii) कठपुतली को अपने पैरों पर खड़ा होने की इच्छा है, लेकिन वह क्यों नहीं खड़ी होती?
उत्तर - वह अपने पैरों पर इसलिए खड़ा नहीं हो पाती क्योंकि वह धागों

से बँधी हुई है। वह दूसरे के अधीन है तथा उसका स्वयं पर कोई वश नहीं चलता। वह अपना हाथ-पैर भी अपनी इच्छानुसार नहीं चला सकती क्योंकि वह निर्जीव है।

(iii) पहली कठपुतली की बात दूसरे कठपुतलियों को क्यों अच्छी लगी?
उत्तर - पहली कठपुतली की बात अन्य कठपुतलियों को इसलिए अच्छी लगी कि आजादी सबको प्रिय है।

(iv) पहली कठपुतली ने स्वयं कहा कि- 'ये धागे! क्यों हैं मेरे पीछे-आगे?! इन्हें तोड़ दो! मुझे मेरे पाँवों पर छोड़ दो।' - तो फिर वह चिंतित क्यों हुई कि 'ये कैसी इच्छा है' मेरे मन में जगी? नीचे दिये गये वाक्यों की मदद से अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उसे दूसरी कठपुतली की जिम्मेदारी महसूस होने लगी। (ख) उसे शीघ्र स्वतंत्र होने की चिन्ता होने लगी। (ग) वह स्वतंत्रता की इच्छा को साकार करने तथा हमेशा बनाये रखने की सोचने लगी। (घ) वह डर गई, क्योंकि उसकी उम्र कम थी।

उत्तर - पहली कठपुतली बंधन का जीवन जीते-जीते दुःखी हो गयी थी। अपनी पराधीनता पर उसे क्रोध आ गया, इसलिए उसने आजाद होकर आत्मनिर्भर होने की इच्छा जतायी, लेकिन जब सारी कठपुतली

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

उसकी हाँ में हाँ मिलाने लगी। उसके नेतृत्व में विद्रोह के लिए तैयार होने लगी, तो वह डर गई। वह सोच में पड़ गई कि सबकी जिम्मेदारी लेकर वह इतना बड़ा कदम कैसे उठाए। अब वह सभी दूसरों पर आश्रित रहे हैं, एकदम से मिली आजादी में कहीं उनके कदम लड़खड़ा तो नहीं जाएँगे। यही कारण था कि पहली कठपुतली चिंतित होकर अपने फैसले के बारे में सोचने लगी।

(v) कठपुतली को धागे से क्यों बाँधा जाता है?

उत्तर - अपनी उँगलियों के इशारों पर नचाने के लिए कठपुतलियों को धागे से बाँधा जाता है।

(vi) कठपुतली सजीव होती है या निर्जीव?

उत्तर - कठपुतली निर्जीव होती है। लेकिन कविता में कवि ने उसका चित्रण सजीव के रूप में किया है।

(vii) पहली कठपुतली के मन में विद्रोह की भावना क्यों उत्पन्न हुई?

उत्तर - पहली कठपुतली गुलामी जीवन से तंग आ गई थी। धागों में बँधकर दूसरों के इशारों पर नाचते हुए उसका मन दुखित हो गया था। उसने अपने आस पास दूसरे लोगों को हँसते-मुस्कुराते अपनी इच्छानुसार काम करते देखकर, उसके मन में विद्रोह की भावना उत्पन्न हो गई।

(viii) पहली कठपुतली अपनी सभी सहेलियों को विद्रोह की बात पर एकजुट होते देख अपने फैसले पर पुनः विचार क्यों करने लगी?

उत्तर - पहली कठपुतली की बात सुनकर सभी कठपुतलियाँ विद्रोह की बात करने लगीं। यह देखकर पहली कठपुतली सोच में पड़ गयी कि क्या उसका फैसला सही था। उसे भय होने लगा कि कहीं उसकी यह इच्छा उसकी सहेलियों को किसी मुसीबत में न डाल दे। वह जानती थी कि आजादी हासिल करना कठिन है तो उसे सँभाल पाना और भी कठिन है।

(ix) कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर - कविता के माध्यम से कवि ने स्वतंत्रता के महत्व को रेखांकित किया है, साथ ही स्वतंत्रता के साथ आने वाली जिम्मेदारियों की तरफ भी सबका ध्यान आकर्षित किया है। आजाद होना अच्छा लगता है लेकिन आजादी का सही उपयोग कम ही लोग कर पाते हैं। इतना ही नहीं आजाद होने के बाद आत्मनिर्भर भी होना पड़ता है आजादी हासिल करने के बाद अपनी जरूरतों के लिए दूसरों पर आश्रित नहीं रहा जा सकता अतः स्वतंत्र होने के बाद स्वावलम्बी होना भी जरूरी होता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(x) कठपुतली के मन में कौन-सी इच्छा जगी ?
(क) नाचने की (ख) गीत गाने की
(ग) स्वतंत्र होने की (घ) अन्यत्र रहने की
उत्तर - (ग)

(xi) कठपुतली ने अपनी इच्छा कैसे प्रकट की ?
(क) विनम्रतापूर्वक (ख) क्रोधपूर्वक
(ग) लिखित रूप देकर (घ) दूसरों से कहलवाकर
उत्तर - (ख)

(xii) 'पाँवों पर छोड़ देने' का आशय क्या है ?
(क) आश्रय न देना (ख) सहारा देना
(ग) स्वतंत्र कर देना (घ) पैरों से सहारा हटा देना । उत्तर - (ग)

(xiii) 'मन के द्वंद्व दूना' का आशय है ?
(क) कविता की रचना करना
(ख) कविता पढ़ना
(ग) अपनी मन मर्जी से काम करना
(घ) पैरों से सहारा हटा देना
उत्तर - (ग)

(xiv) पहली कठपुतली पर अन्य कठपुतलियों की इच्छा का क्या असर हुआ ?
(क) खुशी बढ़ गई (ख) प्रेरणा मिली
(ग) सोच में पड़ गई (घ) दुःखी हुई
उत्तर - (ग)

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

है।

भाषा तीन प्रकार के होते हैं –

(i) भाषा ध्वनि-संकेत – सार्थक शब्दों के समूह या संकेत को भाषा ध्वनि-संकेत कहते हैं। जैसे – रेलगाड़ी का गार्ड हरी झंडी दिखाकर यह भाव व्यक्त करता है कि रेलगाड़ी अब खुलनेवाली है।

(ii) लिखित भाषा – जिस शब्द को लिखकर किसी को समझाने या बताने का प्रयास किया जाता है, उसे लिखित भाषा कहते हैं। जैसे – कुत्ता, हाथी, बिल्ली आदि।

(iii) मौखिक भाषा – जिन शब्दों को हम बोलकर किसी को समझाने का प्रयास करते हैं, उसे मौखिक भाषा कहते हैं। जैसे – बच्चा, बूढ़ा, जवान आदि।

अनुनासिक (ँ) – ऐसे स्वरों का उच्चारण करते समय नाक से कम तथा मुँह से अधिक ध्वनि निकलती है, उसे अनुनासिक कहते हैं। जैसे – गाँव, दाँत, आगन आदि।

अनुस्वार (ं) – यह स्वर के बाद आनेवाला व्यंजन है, जिनका उच्चारण करते समय नाक से अधिक तथा मुँह से कम ध्वनि निकलती है, उसे अनुस्वार कहते हैं। जैसे – अंश, हंस, अंगूर आदि।

निरनुनासिक – ऐसा स्वर वर्ण जिनका उच्चारण केवल मुँह द्वारा निकली गई ध्वनि से होता है, उसे निरनुनासिक कहते हैं। जैसे – इधर, उधर, आप, अपना, घर इत्यादि।

होता है, उसे स्वर वर्ण कहते हैं। जैसे, अ, आ, –

स्वर वर्ण के भेद –

(i) ह्रस्व स्वर वर्ण – ऐसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में अति अल्प समय लगता है, उसे ह्रस्व स्वर कहते हैं। जैसे – अ, इ, उ, ऋ।

(ii) दीर्घ स्वर वर्ण – ऐसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में ह्रस्व स्वर वर्ण की अपेक्षा दोगुना समय लगता है, उसे दीर्घ स्वर वर्ण कहते हैं। जैसे – आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

(iii) प्लुत स्वर वर्ण – ऐसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में ह्रस्व स्वर की अपेक्षा तीन गुना समय लगता है, उसे प्लुत स्वर वर्ण कहते हैं। जैसे – ओ३म, ॐ।

व्यंजन वर्ण – ऐसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में स्वर वर्ण की मदद ली जाती है, उसे व्यंजन वर्ण कहते हैं। जैसे – क – ह।

व्यंजन वर्ण के भेद –

(i) स्पर्श व्यंजन – ऐसा वर्ण जिनका उच्चारण कंठ, तालु, मूर्धा, दंत और ओष्ठ स्थानों के स्पर्श करने से होता है, उसे स्पर्श व्यंजन कहते हैं। जैसे – क वर्ग से प वर्ग तक।

(ii) अंतःस्थ व्यंजन – ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण जीभ, तालु, दाँत और ओष्ठ के स्पर्श से होता है, उसे अंतःस्थ व्यंजन कहते हैं। अंतःस्थ व्यंजन को अर्द्धस्वर भी कहा जाता है। जैसे – य, र, ल, व।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

(iii) ऊष्म व्यंजन – वैसे वर्ण जिनका उच्चारण हमारे शरीर के अंदर एक प्रकार की रगड़ या घर्षण से उत्पन्न ऊष्म वायु से होता है, उसे ऊष्म व्यंजन कहते हैं। जैसे - श, ष, स, ह ।

वायु प्रक्षेप की दृष्टि से व्यंजन वर्ण के दो भेद होते हैं —

(i) अल्पप्राण – वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में श्वास पहले से अल्प मात्रा में निकले तथा जिनमें 'हकार' जैसी ध्वनि नहीं होती है, उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहते हैं। जैसे - स्पर्श व्यंजन का पहला, तीसरा एवं पाँचवा वर्ण तथा अंतःस्थ व्यंजन अल्पप्राण व्यंजन हैं।

(ii) महाप्राण – वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में श्वास अधिक मात्रा में तथा हकार जैसी ध्वनि विशेष रूप से निकलती है, उसे महाप्राण व्यंजन कहते हैं। जैसे - स्पर्श व्यंजन का दूसरा एवं चौथा वर्ण तथा ऊष्म व्यंजन वर्ण महाप्राण व्यंजन हैं।

नाद की दृष्टि से व्यंजन वर्ण के दो भेद होते हैं –

(i) अघोष वर्ण – वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में हमारी स्वरतंत्रियाँ झंकृत नहीं होती हैं, उसे अघोष वर्ण कहते हैं। जैसे - स्पर्श व्यंजन का पहला एवं दूसरा वर्ण तथा श, ष, स ।

(ii) [illegible]घोष वर्ण – वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करते में हमारी स्वरतंत्रियाँ झंकृत [illegible] होती हैं, उसे [illegible]घोष वर्ण कहते हैं। जैसे - स्पर्श व्यंजन का पहला, तीसरा एवं पाँचवा वर्ण, सभी स्वर वर्ण, य, र, ल, व और ह ।

विसर्ग (:) अनुस्वार की तरह प्रयोग होनेवाला यह एक व्यंजन वर्ण है तथा इसका उच्चारण 'ह' की तरह होता है। हिन्दी में अब इसका अभाव होता जा रहा है, लेकिन तत्सम शब्दों के प्रयोग में इसका आज भी उपयोग होता है। जैसे - पयःपान, प्रातःकाल, अतः इत्यादि।

बलाघात (स्वराघात) – बोलते समय अर्थ या उच्चारण की स्पष्टता के लिए जब हम किसी अक्षर पर विशेष बल देते हैं, तो इस क्रिया का बलाघात या स्वराघात कहा जाता है। जैसे - विष्णु, इन्द्र, राम, इत्यादि।

संगम – उच्चारण करते समय दो ध्वनियों के बिच जो विराम आता है, उसे संगम कहते हैं जैसे - तुम्हारे, उत्पन्न इत्यादि ।

अनुतान – बोलने के क्रम में जो सुर में उतार-चढ़ाव होता है, उसे अनुतान का सुरबहर कहते हैं। जैसे कौन करेगा तथा करेगा कौन ?

लिपि – वर्णों को लिखने के लिए जिन सांकेतिक चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उसे लिपि कहते हैं। जैसे - ा, ि, ी, ---

ध्वनि – भाषा की सबसे छोटी इकाई को ध्वनि कहते हैं।

वर्तनी – वर्णों को ठीक ढंग से लिखने की रीति को वर्तनी कहते हैं।

अयोगवाह - वैसा वर्ण जो न तो स्वर है न व्यंजन फिर भी वह ध्वनि का वहन करता है, उसे अयोगवाह कहते हैं। जैसे - अं, अः ।

हल् - व्यंजन वर्णों के निचे जब तिरछी रेखा (्) लगाई जाती है, उसे हल् कहते हैं। हल् लगाने का अर्थ है कि व्यंजन में स्वरवर्ण का बिलकुल अभाव है या व्यंजन आधा है। जैसे - क्, ख्, ...

वर्ण-विच्छेद - वर्णों को अलग करने की रीति को वर्ण-विच्छेद कहते हैं। जैसे - क = क्+अ ।

पंचमाक्षर - अनुनासिक वर्णों को ही पंचमाक्षर वर्ण कहते हैं। जैसे - ङ, ञ, ण, न, म ।

संयुक्ताक्षर - वैसा वर्ण जिसमें दो या दो से अधिक व्यंजन वर्णों का मेल होता है, उसे संयुक्तव्यंजन कहते हैं। जैसे, क्ष, त्र, ज्ञ, श्र ।

उच्चारण स्थान का विवरण -

स्थान	वर्ण	नाम
कंठ -	अ, आ, क्, ख्, ग्, घ्, ङ्	- कंठ्य वर्ण
तालु -	इ, ई, च्, छ्, ज्, झ्, ञ्, य्, श्	- तालव्य वर्ण
मूर्द्धा -	ऋ, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, र्, ष्	- मूर्द्धन्य वर्ण
दंत -	त्, थ्, द्, ध्, न्, ल्, स्	- दंत्य वर्ण
ओष्ठ -	उ, ऊ, प्, फ्, ब्, भ्, म्	- ओष्ठ्य वर्ण
कंठ-तालु -	ए, ऐ	- कंठ-तालव्य वर्ण
कंठ-ओष्ठ -	ओ, औ	- कंठोष्ठ्य वर्ण
दंतोष्ठ -	व्	- दंतोष्ठ्य वर्ण
नासिका -	ङ्, ञ्, ण्, न्, म्	- नासिक्य वर्ण

Scanned with CamScanner

वर्ग - VII, VIII, IX, X

व्याकरण

(1)

संज्ञा

संज्ञा - किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान भाव, गुण, दोष, मात्रा, अनुभव आदि को संज्ञा कहते हैं। जैसे- राम, पुस्तक, मेला, लज्जा इत्यादि।

संज्ञा के पाँच भेद होते हैं -

(i) व्यक्तिवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी विशेष या खास व्यक्ति, स्थान, नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- राम, रामायण, हिमालय आदि।

(ii) जातिवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी जाति भर का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- पहाड़, शायद आदि।

(iii) समूहवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी झुंड, समूह या समुदाय का बोध होता है, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- सेना, वर्ग, सभा, गुच्छा इत्यादि।

(iv) द्रव्यवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी द्रव्य या धातु, वस्तु की परिमाण / मात्रा का बोध होता है, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे - सोना, चाँदी, घी, तेल इत्यादि।

(v) भाववाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु के गुण, दोष, धर्म, स्वभाव इत्यादि का बोध होता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- बुढ़ापा, ईमानदारी, महत्ता इत्यादि।

(2)

सर्वनाम

सर्वनाम - संज्ञाओं अथवा नामों के बदले जिन शब्दों का प्रयोग होता है, उन्हें सर्वनाम कहते हैं। जैसे- मैं, वह, तुम, आप, जो इत्यादि।

सर्वनाम के भेद -

(i) पुरुषवाचक - बोलने वाले, सुननेवाले तथा जिसके विषय में जो कुछ कहा या सुना जाये, उसे पुरुष-वाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे मैं, हम, तुम, वह इत्यादि।

पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद-

(i) उत्तम पुरुष - वक्ता / बोलनेवाले को उत्तम पुरुष कहते हैं। जैसे- मैं, हम, मैंने, मुझको इत्यादि।

(ii) मध्यम पुरुष - सुननेवाले को मध्यम पुरुष कहते हैं। जैसे- तुम, आप, तू, तुमलोग इत्यादि।

(iii) अन्यपुरुष - जिसके विषय में कुछ कहा या सुना जाये, उसे अन्य पुरुष कहते हैं। जैसे- वह, वेलोग, यह, वे, ये इत्यादि।

(ii) निश्चयवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से किसी व्यक्ति या भाव के निश्चय होने का बोध हो, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे - यह, वह, इत्यादि।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(g) अनिश्चय वाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु या भाव के अनिश्चय होने का बोध होता है, उसे अनिश्चय वाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे- कोई, कुछ आदि।

(h) संबंधवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से किसी संज्ञा के साथ संबंध प्रकट होता है, उसे संबंध वाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे- वह कौन है, जो दरवाजे पर खड़ा है।

(i) निजवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से स्वयं या निज का बोध होता है, उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे - मैं यह काम स्वयं ही कर लूँगा।

(j) प्रश्नवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से प्रश्न पूछने या करने का बोध होता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनम कहते हैं। जैसे- कौन, क्या, कहाँ, क्यों इत्यादि।

विशेषण

विशेषण - संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं। जैसे- काला, मोटा, छोटा, कमजोर इत्यादि।

विशेषण के भेद -

(i) गुणवाचक विशेषण - जिस शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु स्थान के गुण, दोष, स्वभाव, अवस्था का बोध होता है, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं, जैसे - काला, मोटा, गोल, भूखा इत्यादि।

(ii) परिमाणवाचक विशेषण - जिस शब्द से किसी वस्तु की माप-तौल या परिमाण/मात्रा का बोध होता है, उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे - थोड़ा, कम इत्यादि।

(iii) संख्यावाचक विशेषण - जिस शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु की संख्या का बोध होता है, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे - तीन पुस्तकें, चार कलमें, दो आदमी इत्यादि।

(iv) सार्वनामिक विशेषण - किसी संज्ञा के पहले आनेवाले सर्वनाम को सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। जैसे - यह पुस्तक अच्छी है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

क्रिया

क्रिया – जिस शब्द से किसी काम के करने या होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं। जैसे- वह पढ़ता है। मैं सोता हूँ।

क्रिया के भेद –

(i) सकर्मक क्रिया – जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म रहता है तथा क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे- राम पुस्तक पढ़ता है।

(ii) अकर्मक क्रिया – जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म नहीं रहता तथा क्रिया का फल कर्ता पर पड़ता है उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे- राम पढ़ता है।

सहायक क्रिया –

मुख्य क्रिया के अर्थ को स्पष्ट करने में जो क्रियाएँ सहायता करती हैं, उसे सहायक क्रिया कहते हैं। जैसे – है, था, रहे, गा, होंगे इत्यादि।

प्रेरणार्थक क्रिया –

जिन क्रियाओं से यह पता चलता है कि कर्ता स्वयं कार्य न कर किसी दूसरे से करने के लिए प्रेरित करता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। जैसे - राम, मोहन से काम करवाता है।

वाच्य

क्रिया के उस परिवर्तन को वाच्य कहते हैं, जिसके द्वारा यह ज्ञात होता है कि वाक्य में कर्त्ता, कर्म या भाव में से किसकी प्रधानता है तथा उनमें किसके अनुसार क्रिया के पुरुष, लिंग, वचन आदि आये हैं।

वाच्य के भेद –

(i) कर्तृवाच्य – क्रिया के उस रूपांतर को कर्तृवाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में कर्त्ता की प्रधानता का बोध हो। जैसे- लड़का आम खाता है। मोहन पुस्तक पढ़ता है।

(ii) कर्मवाच्य – क्रिया के उस रूपांतर को कर्मवाच्य कहते हैं, जहाँ वाक्य में कर्म की प्रधानता का बोध होता है। जैसे - पुस्तक पढ़ी जाती है।

(iii) भाववाच्य – क्रिया के उस रूपांतर को भाववाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में भाव की प्रधानता रहती है। जैसे - धूप में चला नहीं जाता।

प्रविशेषण –

विशेषण की विशेषता बतलाने वाले शब्द को प्रविशेषण कहते हैं। जैसे- राम बहुत तेज विद्यार्थी है। यहाँ 'तेज' विशेषण है और उसका भी विशेषण है 'बहुत'।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

लिंग

संज्ञा, सर्वनाम या क्रिया के जिस रूप से किसी व्यक्ति, वस्तु या भाव की जाति (स्त्री या पुरुष) का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं। जैसे - राजा, घोड़ा, लड़का, लड़का, कुत्ता - कुतिया इत्यादि।

लिंग के भेद -

(i) पुँलिंग - जिस शब्द से पुरुष जाति का बोध होता है, उसे पुँलिंग कहते हैं। जैसे - बालक, खटमल आदि।

(ii) स्त्रीलिंग - जिस शब्द से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग शब्द कहते हैं। जैसे - रानी, घोड़ी, लड़की इत्यादि।

पुँलिंग शब्दों का लिंग-निर्णय -

(क) अकारांत तत्सम शब्द पुँलिंग होते हैं। जैसे - धन, जन, वन, जल

(ख) हिन्दी के आकारांत शब्द पुँलिंग होते हैं। जैसे - लड़का, पटाखा इत्यादि

नोट - उक्त नियम के कुछ अपवाद भी हैं।

स्त्रीलिंग शब्दों का लिंग-निर्णय -

आकारांत, इकारांत, ईकारांत, उकारांत तत्सम शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे - दया, माया, आज्ञा, घोषणा, सूचना, ईर्ष्या, इच्छा इत्यादि। पूर्ति, नारी, गोष्ठी, मृत्यु, वस्तु, ऋतु, वायु आदि।

लिंग-निर्णय के सामान्य नियम -

(क) जिन शब्दों के अंत में त्व, ना, आ, आटा, आव, आवा, औड़ा, पन इत्यादि प्रत्यय लगते हो, वे पुँलिंग होते हैं। जैसे - महत्व, पढ़ना, शौर्य, घेरा, सन्नाटा, बुढ़ापा, फैलाव, पहनावा, पकौड़ा, मित्र, बचपन, पागलपन इत्यादि।

(ख) जिन शब्दों के अंत में आई, आवट, आस, आहट, इया, ई, त, नी, री, ली इत्यादि प्रत्यय लगते हो, वे स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे - मलाई, बनावट, मिठास, घबराहट, टिकिया, गरीबी, चाहत, चटनी, कोठरी, डफली इत्यादि।

(ग) संस्कृत (तत्सम) के अकारांत शब्द पुँलिंग तथा आकारांत शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे - जल, स्वर्ग, भिक्षा, शिक्षा, परीक्षा इत्यादि

(घ) तद्भव (हिंदी) के लिंग प्रायः तत्सम (संस्कृत) के लिंग के अनुसार होते हैं। जैसे - आश्चर्य-अचरज, संध्या - साँझ, स्वर्ण - सोना इत्यादि

(ङ) हिन्दी की द्रव्यवाचक संज्ञाएँ पुँलिंग होती हैं। जैसे - लोहा, चना, मोती, दही, घी, तेल, सोना इत्यादि।

अपवाद - चाँदी स्त्रीलिंग है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

वचन

संख्या का बोध कराने वाले शब्द वचन कहलाते हैं। जैसे - लड़का, घोड़े आदि

वचन के भेद -

(i) एकवचन - संज्ञा के जिस रूप से उसके एक होने का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे - लड़का, घर, कलम इत्यादि।

(ii) बहुवचन - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसके एक से अधिक होने का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे - घोड़े, नदियाँ इत्यादि।

वचन परिवर्तन के नियम -

(i) आकारान्त शब्दों के अंत में 'ए' लगाकर बहुवचन शब्द बनाते हैं जैसे लड़का - लड़के, घोड़ा - घोड़े इत्यादि।

(ii) व्यंजनांत मूल शब्दों के अंत में 'अ' का लोप कर उसके स्थान पर एँ लगाकर बहुवचन बनता है। जैसे - नहर - नहरें, रात - रातें इत्यादि।

(iii) आकारान्त/उकारान्त/ओकारांतवाले शब्दों में अंतिम स्वर का लोप नहीं होता है, अंतिम स्वर के बाद एँ लगाते हैं। जैसे - महिला - महिलाएँ, बधू - बधुएँ इत्यादि।

(iv) ईकारान्त संज्ञा शब्दों में 'आँ' बहुवचन सूचक प्रत्यय लगाता है तो अंतिम स्वर 'ई' का ह्रस्व 'इ' हो जाता है जैसे नारी - नारियाँ, टोपी - टोपियाँ इत्यादि।

(v) समुदाय सूचक शब्दों का प्रयोग बहुवचन में होता है। जैसे - मनुष्य, जनता, भीड़, मवेशी इत्यादि।

(vi) कुछ शब्दों के एकवचन एवं बहुवचन एक समान होते हैं जैसे क्रोध, भय, दान, स्वामी, तपस्वी इत्यादि।

(vii) लोग, दर्शन, प्राण, बाल, हस्ताक्षर, आँसू, समाचार सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं। जैसे

(viii) छाया, प्रेम, जल, दूध, वर्षा, हवा, आग सदा एकवचन में प्रयुक्त होते हैं।

(ix) कुछ शब्दों के बहुवचन बनाने के लिए शब्दों के अंत में 'गण' या 'वृन्द' लगाते हैं। जैसे कर्मचारीगण, शिक्षकगण, छात्रवृन्द इत्यादि।

पद -

जब वाक्य में शब्द के साथ विभक्ति लगी रहती है, उसे पद कहते हैं। अर्थात् विभक्ति सहित शब्द पद कहलाते हैं। जैसे, राम पुस्तक को पढ़ता है।

पद-परिचय - पद परिचय का अर्थ होता है, पदों का अन्वय, अर्थात् विश्लेषण।

वाक्य के प्रत्येक पद को अलग-अलग उसका स्वरूप और दूसरे पद से संबंध बताना 'पद-परिचय' कहलाता है। जैसे राम कहता है कि मैं मोहन की पुस्तक पढ़ सकता हूँ।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप और कार्य से उनका संबंध वाक्य में क्रिया के साथ जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं। जैसे - मैंने पत्र लिखा। राम ने मोहन को पीटा।

कारक के भेद —

(i) कर्त्ता कारक - संज्ञा के जिस रूप से क्रिया करनेवाले का बोध होता है, उसे कर्त्ता कारक कहते हैं। जैसे तुमने आम खाया। इसका परसर्ग 'ने' होता है।

(ii) कर्म कारक - वाक्य में क्रिया का फल जिन शब्द पर पड़ता है, उसे कर्मकारक कहते हैं। इसका परसर्ग 'को' है। जैसे - मोहन ने आम खाया।

(iii) करण कारक - जो क्रिया की सिद्धि में साधन के रूप में काम आये, उसे करण कारक कहते हैं। इसका परसर्ग 'से, द्वारा' होता है। जैसे राम ने रावण को बाण से मारा।

(iv) सम्प्रदान कारक - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी को कुछ दिये जाने या किसी के लिए कुछ करने का बोध हो, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। जैसे - वह मेरे लिए पानी लाता है। इसका परसर्ग 'को, के लिए, वास्ते, के हेतु' होता है।

(v) अपादान कारक - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से विरह, बिछुड़ना, दूरी, तुलना आदि का बोध हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। जैसे - पेड़ से पत्ते गिरते हैं। इसका परसर्ग 'से' होता है।

(vi) संबंध कारक - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी एक वस्तु का अन्य वस्तु के साथ संबंध प्रकट होता है, उसे संबंध कारक कहते हैं। इसका परसर्ग अर्थात चिन्ह का, की, के होता है। जैसे - मोहन की गाय।

(vii) अधिकरण कारक - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से आधार का बोध होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। जैसे - छत पर लड़का बैठा है। इसका परसर्ग 'में, पर' होता है।

(viii) सम्बोधन कारक - जिस शब्द से किसी को पुकारने या बुलाने का भाव प्रकट होता है, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं। इसका परसर्ग "हे, हो, अरे, ओ" होता है। जैसे हे, राम यहाँ आओ।

निबंध —

i) बिहार पहले और अब
ii) छात्र और अनुशासन
iii) समय की महत्ता
iv) दहेज प्रथा
v) बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
vi) आतंकवाद
vii) बेकारी की समस्या
viii) वृक्षारोपण
ix) प्रदूषण
x) खेल का महत्व
xi) साम्प्रदायिकता
xii) बढ़ती हुई महँगाई
xiii) नारी शिक्षा
xiv) जनसंख्या विस्फोट
xv) आदर्श छात्र
xvi) युवा पीढ़ी एवं नशीला पदार्थ
xvii) स्वच्छता

नोट — विद्यार्थीगण उपरोक्त निबंध की तैयारी अपने अपने स्तर से करेंगे।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

वर्ग - VII हिन्दी की (1)

महाभारत पुस्तक पुस्तक

प्रश्न - महाभारत की रचना किसने की?
उत्तर - महाभारत की रचना महर्षि पराशर के कीर्तिमान पुत्र वेद व्यास ने की।
प्र० - व्यास जी के पुत्र का क्या नाम था?
उत्तर - व्यास जी के पुत्र का नाम शुकदेव जी था।
प्र० - महाभारत कथा का प्रसार मानव-जाति के बिच किसने किया?
उत्तर - महर्षि वैशंपायन ने महाभारत कथा का प्रसार मानव-जाति के बिच किया।
प्र० - महाराज शांतनु कहाँ के सम्राट थे?
उत्तर - महाराज शांतनु हस्तिनापुर के सम्राट थे।
प्र० - महाराज शांतनु के बाद हस्तिनापुर की गद्दी पर कौन बैठा?
उत्तर - महाराज शांतनु के बाद चित्रांगद हस्तिनापुर की गद्दी पर बैठा।
प्र० - विचित्रवीर्य कौन था?
उत्तर - विचित्रवीर्य महाराज शांतनु का दूसरा पुत्र था।
प्र० - विचित्रवीर्य के कितने पुत्र थे?
उत्तर - विचित्रवीर्य के दो पुत्र थे- धृतराष्ट्र और पांडु।
प्र० - धृतराष्ट्र कब से अंधे थे?
उत्तर - धृतराष्ट्र जन्म से ही अंधे थे।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

प्र०- समय की नीति के अनुसार हस्तिनापुर के कौन राजा हुए ?
उत्तर- समय की नीति के अनुसार पांडु हस्तिनापुर के राजा बने ।
प्र०- पांडु की कितनी रानियाँ थी ?
उत्तर- पांडु की दो रानियाँ थी- कुंती तथा माद्री ।
प्र०- शकुनि कौन था ?
उत्तर- शकुनि गांधार नरेश तथा धृतराष्ट्र का साला था ।
प्र०- पांडु से जन्मे पुत्र क्या कहलाते थे ?
उत्तर- पांडु से जन्मे पुत्र पांडव कहलाते थे ।
प्र०- धृतराष्ट्र से जन्मे पुत्र क्या कहलाते थे ?
उत्तर- धृतराष्ट्र से जन्मे पुत्र कौरव कहलाते थे ।
प्र०- पांडु के कितने पुत्र थे ?
उत्तर- पांडु के पाँच पुत्र थे। उनके नाम थे - युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल तथा सहदेव ।
प्र०- धृतराष्ट्र के बड़े पुत्र का क्या नाम था ?
उत्तर- धृतराष्ट्र के बड़े पुत्र का नाम दुर्योधन था ।
प्र०- कुंती कौन थी ?
उत्तर- कुंती पांडु की पत्नी तथा

पाँचो पांडवों की माँ थी ।
प्र०- द्रौपदी कौन थी ?
उत्तर- द्रौपदी राजा द्रुपद की बेटी तथा पांडवों की पत्नी थी ।
प्र०- देवव्रत कौन था ?
उत्तर- देवव्रत महाराज शांतनु का सबसे बड़ा बेटा था । उनकी माँ का नाम गंगा था । देवव्रत गंगा के आठवाँ पुत्र थे ।
प्र०- देवव्रत को शिक्षा किसने दी ?
उत्तर- महर्षि वशिष्ट ने देवव्रत को शिक्षा दी ।
प्र०- राजा शांतनु ने यमुना तट पर किसे देखा तथा उसका नाम क्या था ?
उत्तर- राजा शांतनु ने यमुना तट पर एक तरुणी को देखा और उसका नाम सत्यवती थी ।
प्र०- जब महाराज शांतनु ने उस तरुणी को देखा तो उसके मन में कैसा भाव जाग उठा ?
उत्तर- जब महाराज शांतनु ने उस तरुणी को देखा तो उसके मन में उसे अपनी पत्नी बनाने का भाव जाग उठा ।
प्र०- राजा शांतनु ने सत्यवती से क्या याचना की ?
उत्तर- राजा शांतनु ने सत्यवती से प्रेम - याचना की ।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

प्र०- सत्यवती कौन थी ?
उत्तर - सत्यवती निषाद राज की पुत्री थी ।
प्र०- निषादराज कौन थे ?
उत्तर - निषादराज मल्लाहों के सरदार थे ।
प्र०- केवटराज की शर्त राजा शांतनु को कैसी लगी ?
उत्तर - केवटराज की शर्त राजा शांतनु को नागवार लगी ।
प्र०- देवव्रत का नाम भीष्म कैसे पड़ा,
उत्तर - अपने पिता की खुशी के लिए जब देवव्रत ने यह शपथ ली कि मैं जीवन भर विवाह नहीं करूँगा। आजन्म ब्रह्मचारी रहूँगा। इसी भीषण प्रतिज्ञा के कारण देवव्रत का नाम भीष्म पड़ा ।
प्र०- सत्यवती के कितने पुत्र हुए तथा उनके नाम क्या थे ?
उत्तर - सत्यवती के दो पुत्र हुए। उनके नाम थे - चित्रांगद और विचित्रवीर्य ।
प्र०- विचित्रवीर्य की कितनी रानियाँ थी ?
उत्तर - विचित्रवीर्य की दो रानियाँ थी। उनके नाम थे - अंबिका और अंबालिका ।

प्र० धृतराष्ट्र के माता - पिता का क्या नाम था ?
उत्तर - धृतराष्ट्र के माता का नाम अंबिका एवं पिता का नाम विचित्रवीर्य था ।
प्र०- पांडु के माता - पिता का क्या नाम थे ?
उत्तर - पांडु के माता का नाम अंबालिका एवं पिता का नाम विचित्रवीर्य था ।
प्र०- चित्रांगद की मृत्यु कैसे हुई ?
उत्तर - गंधर्व युद्ध में चित्रांगद की मृत्यु हो गई ।
प्र०- चित्रांगद की मृत्यु के बाद हस्तिनापुर की राजगद्दी पर कौन बैठा ?
उत्तर - चित्रांगद की मृत्यु के बाद हस्तिनापुर की गद्दी पर सम्राट के रूप में भीष्म को रखा गया, क्योंकि उस समय विचित्रवीर्य की आयु बहुत ही छोटी थी ।
प्र०- भीष्म कैसे व्यक्ति थे ?
उत्तर - भीष्म बड़े बुद्धिमान एवं विद्वान थे ।
प्र०- सौभदेश का राजा कौन था ?
उत्तर - शाल्व सौभदेश का राजा था।
प्र०- अंबा कौन थी ?
उत्तर - काशीराज की सबसे बड़ी कन्या का नाम अंबा था ।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

प्र०- शिखंडी कौन था ?

उत्तर - जब राजा शाल्व ने अंबा को पत्नी रूप में स्वीकार नहीं किया तथा वह हर तरह से विवश हो गई तो अंबा ने तपस्या शुरू की। अपने तपोबल से स्त्री रूप छोड़कर पुरुष रूप धारण किया तथा अपना नाम शिखंडी रखा।

प्र०- किस मैदान में कौरवों और पांडवों का युद्ध हुआ ?

उत्तर - कुरुक्षेत्र के मैदान में कौरवों और पांडवों का युद्ध हुआ।

प्र०- युद्ध क्षेत्र में शिखंडी कहाँ पर था ?

उत्तर - युद्ध क्षेत्र में शिखंडी अर्जुन के रथ पर आगे बैठा था।

प्र०- भीष्म की मृत्यु कैसे हुई ?

उत्तर - भीष्म एक महान योद्धा था। ऐसा माना जाता है कि उनके हाथ में धनुष-बाण जबतक रहेंगे, उन्हें कोई पराजित नहीं कर सकता था। उनको पराजित करने के लिए पांडवों ने शिखंडी का सहारा लिया। ज्योंहि शिखंडी भीष्म के सामने आया उसने उस पर बाण चलाना वीरोचित प्रतिष्ठा के विरुद्ध समझा। भीष्म ने अपनी धनुष-बाण फेंक दी। त्योंहि अर्जुन ने भीष्म पर प्रहार कर दिया।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

प्र० - विदुर कौन थे ?
उत्तर - विदुर यानी अंबालिका की दासी के पुत्र थे।
प्र० - धृतराष्ट्र का प्रधानमंत्री कौन था?
उत्तर - विदुर धृतराष्ट्र का प्रधानमंत्री था।
प्र० - दुर्योधन को जुआ खेलने की अनुमति किसने दी ?
उत्तर - धृतराष्ट्र ने दुर्योधन को जुआ खेलने की अनुमति दी।
प्र० - विदुर ने धृतराष्ट्र से क्या निवेदन किया ?
उत्तर - विदुर ने धृतराष्ट्र से निवेदन किया कि "राजन् मुझे आपका यह काम अच्छा नहीं लगता। इस खेल के कारण आपके बेटे में आपस में बैरभाव बढ़ेगा। इसको रोक दीजिए।"
प्र० - राजा धृतराष्ट्र ने अपने पुत्र दुर्योधन से क्या आग्रह किया ?
उत्तर - धृतराष्ट्र ने दुर्योधन से आग्रह किया कि "गांधारी के लाल। विदुर बड़ा बुद्धिमान है और हमेशा हमारा भला चाहते आया है। वत्स। जुआ खेलने का विचार छोड़ दो। विदुर कहता है कि इससे विरोध बढ़ेगा और वह राज्य के नाश का कारण बन जाएगा। छोड़ दो इस विचार को।"
प्र० - जुआ खेलने के लिए युधिष्ठिर को न्योता किसने भेजा ?

उत्तर - युधिष्ठिर को जुआ खेलने का न्योता राजा धृतराष्ट्र ने भेजा।
प्र० - किसकी मर्यादा रखने के लिए युधिष्ठिर जुआ खेलने के लिए राजी हो गये ?
उत्तर - क्षत्रिय कुल की मर्यादा रखने के लिए युधिष्ठिर जुआ खेलने के लिए राजी हो गये।
प्र० - शूरसेन किस वंश के राजा थे ?
उत्तर - शूरसेन यदुवंश के प्रसिद्ध राजा थे।
प्र० - कृष्ण के पितामह का क्या नाम था ?
उत्तर - कृष्ण के पितामह का नाम शूरसेन था।
प्र० - शूरसेन की कन्या का क्या नाम था ?
उत्तर - शूरसेन की कन्या का नाम पृथा था।
प्र० - शूरसेन के फुफेरे भाई का नाम क्या था ?
उत्तर - शूरसेन के फुफेरे भाई का नाम कुंतीभोज था।
प्र० - पृथा का नाम कुंती कैसे पड़ा ?
उत्तर - जब शूरसेन अपनी कन्या पृथा को, कुंतीभोज को गोद दे दिया, तब से पृथा का नाम कुंती हो गया।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

प्र०- कुंती ने एक वर्ष तक किसकी सेवा-सुश्रूषा की ?
उत्तर - कुंती ने महर्षि दुर्वासा की सेवा-सुश्रूषा एक वर्ष तक की।
प्र०- ऋषि ने कुंती को क्या वरदान दिया?
उत्तर - ऋषि ने कुंती को वर दिया कि "कुंतिभोज-कन्ये, तुम किसी भी देवता का ध्यान करोगी, तो वह अपने ही समान एक तेजस्वी पुत्र तुम्हें प्रदान करेगा।"
प्र०- कुंती ने किस देवता का ध्यान किया ?
उत्तर - कुंती ने सूर्यदेव का ध्यान किया।
प्र०- कुंती ने जिस बालक को जन्म दिया उसका क्या नाम था ?
उत्तर - कुमारी कुंती ने जिस बालक को जन्म दिया उसका नाम था कर्ण।
प्र०- अपनी लोक-लज्जा के डर से कुंती ने उस बालक को क्या किया ?
उत्तर - अपनी लोक-लज्जा बचाने के लिए कुंती ने उस बालक को सावधानी के साथ एक पेटी में बंद करके उसे गंगा की धारा में प्रवाहित कर दिया।
प्र०- कर्ण के पिता का क्या नाम था?
उत्तर - कर्ण के पिता का नाम सूर्य थो।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

कक्षा - VII, हिन्दी की पूरक पुस्तक महाभारत ①

प्र० - भीम कौन थे ? उत्तर - भीम पाँडु के पुत्र थे, उनकी माता का नाम कुंती था।

प्र० कर्ण कौन था ? उत्तर - कर्ण सूर्यपुत्र था तथा उनकी माता का नाम कुंती था। वह कुँवार में ही कर्ण को जन्म दे दिया था। लोक-लज्जा से बचने के लिए उसने कर्ण को पेटी में बंद करके गंगा की धारा में बहा दिया था।

प्र० अर्जुन कौन था ? उत्तर - अर्जुन पाँडु पुत्र था तथा उनकी माँ कुंती थी। वह धनुषविद्या में पारंगत था। उसके समान धनुष विद्या में कोई नहीं था।

प्र० - कर्ण किस देश का राजा था ? उत्तर - कर्ण अंगदेश का राजा था।

प्र० - कर्ण को अंग देश का राजा किसने बनाया था ?

उत्तर - कर्ण को अंगदेश का राजा दुर्योधन ने बनाया था।

प्र० - इन्द्रदेव कर्ण के पास क्या माँगने गये थे ?

उत्तर - कर्ण के पास इन्द्रदेव उनका कवच एवं कुंडल माँगने गये थे।

प्र० - कर्ण ने इन्द्र से क्या वर माँगा ?

उत्तर - कर्ण ने इन्द्र से शत्रुओं का संहार करने वाला शक्ति माँगा,

प्र० - कर्ण किसका शिष्य था ?

उ० कर्ण परशुराम का शिष्य था।

प्र० - द्रोणाचार्य कौन थे ? उत्तर - द्रोणाचार्य कौरवों एवं पाँडवों के गुरु थे।

Scanned with CamScanner

प्र०- द्रोणाचार्य किनके पुत्र थे ? उत्तर- द्रोणाचार्य महर्षि भारद्वाज के पुत्र थे ।
प्र०- द्रोणाचार्य के पुत्र का क्या नाम था ? उत्तर- द्रोणाचार्य के पुत्र का नाम अश्वत्थामा था ।
प्र०- द्रोणाचार्य को धनुर्विद्या की शिक्षा किसने दिया ?
उत्तर- परशुराम ने द्रोणाचार्य को धनुर्विद्या की शिक्षा दी ।
प्र०- द्रोणाचार्य के मित्र का क्या नाम था ?
उत्तर- द्रोणाचार्य के मित्र का नाम द्रुपद था । जो पांचाल नरेश का पुत्र था ।
प्र०- द्रोणाचार्य कैसे ब्राह्मण थे ?
उत्तर- द्रोणाचार्य एक गरीब ब्राह्मण थे तथा उनकी शादी कृपाचार्य की बहन के साथ हुआ था
प्र०- धृष्टद्युमन कौन था ? उत्तर - धृष्टद्युमन राजा द्रुपद का पुत्र था ।
प्र०- द्रौपदी कौन थी ? उत्तर- द्रौपदी राजा द्रुपद की पुत्री थी तथा पाँचो पांडवो की पत्नी थी ।
प्र०- द्रोणाचार्य को किसने और कहाँ मारा ?
उत्तर- द्रोणाचार्य को धृष्टद्युमन ने कुरुक्षेत्र की रणभूमि में मारा ।

CLASSMATE
Date :
Page :
Scanned with CamScanner

1st Book 6. गंगा स्तुति (कवि - विद्यापति) राष्ट्रभाषा, वर्ग - नवम्

शब्दार्थ - बड़ = बहुत, सुख = प्रसन्नता, पाओल = पाया, तुअ = तुम्हारे, तीरे = किनारे, धोअइत = धोते हुए, नयन = आँख, बह = बहना, नीरे = आँसू, कर = हाथ, जोरि = जोड़कर, विनमओ = प्रार्थना, विमल = स्वच्छ, निर्मल, पवित्र, तरंगे = लहरें, पुनं = पुनः, फिर, पुनमति = पुण्यवती, अपराध = गलती, भूल, छेमब = क्षमा कर देना, मोर = मेरा, जानी = जानकर, परसल = फैली हुई, पाय = पैर, कृतारथ = धन्य होना, सनाने = स्नान करने से, अंतकाल = मृत्यु के समय, जनु = मत, बिसरह = भूलना, मोही = मुझे।

अर्थ - कवि विद्यापति माँ गंगा से प्रार्थना करते हैं कि हे पुण्यमयी गंगे! तुम्हारे निकट रहते हुए हमें अपार सुख का अनुभव हुआ। अब उसे छोड़ते हुए मेरा मन विकल हो उठा है इसी विकलता के कारण आँख से आँसू बहने लगे हैं। इसलिए, हे, माँ गंगे! हाथ जोड़कर विनती करता हूँ कि तुम्हारे निर्मल, पुण्यमयी जलधार का पुनः दर्शन हो।

कवि माँ गंगा से प्रार्थना करता है कि हे माते! मुझसे एक अपराध हो गया है। मुझे अपना पुत्र जानकर क्षमा कर देना, क्योंकि मैंने तुम्हारे फैले अमृत जल में अपने पैर रखे हैं। हे माँ! तुम्हारा जल इतना पवित्र है कि उस जल में एकबार स्नान करने से जीवन धन्य हो जाता है, इसलिए मैं जप-तप, जोग-ध्यान करना आवश्यक नहीं समझता हूँ।

कवि गंगा से प्रार्थना करता है कि हे माँ! जीवन के अंतिम क्षण में तुम मुझे भूल मत जाना। अर्थात् जीवन के अंतिम क्षण में मुझे तुम्हारा दर्शन अवश्य हो।

प्रश्नोत्तर -

प्र०- 'गंगा-स्तुति' कविता के कवि कौन हैं? उत्तर- 'गंगा-स्तुति' कविता के कवि मैथिलकोकिल विद्यापति हैं।

प्र०- गंगा के किनारे को धोते समय कवि के आँखों से आँसू क्यों बह रहे थे?

उत्तर - गंगा के किनारे को धोते समय कवि के आँखों से आँसू इसलिए बह रहे थे कि कवि ने मासपर्यन्त गंगा के निर्मल जल का पान किया था। फैली विस्तृत जलधारा की अलौकिक शोभा के दर्शन किये थे तथा आध्यात्मिक सुख का अनुभव किया था। इस अनुपम सुख से वंचित होने के कारण कवि का हृदय विकल हो उठा है, जिससे उसकी आँखों से आँसू बहने लगे थे।

प्र०- कवि गंगा से किस अपराध की क्षमा माँगता है?

उत्तर - कवि आध्यात्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति है। गंगा को देवनदी कहा गया है, स्नान करते समय अनिवार्य रूप से पैर से गंगा जल का स्पर्श हो जाया करता था। इसी कारण कवि माँ गंगा से प्रार्थना करता है कि हे माँ! मुझे अपना पुत्र समझकर तुम मेरे इस अपराध को क्षमा कर देना।

व्याकरण - निम्नलिखित शब्दों के पर्याय लिखिए -

पाओल = पाते हुए, धोअइत = धोते हुए, समदओं = प्रार्थना, सनाने = स्नान करने से, पाय = पैर।

Scanned with CamScanner

सात पाठ - 7. साइकिल की सवारी, लेखक - सुदर्शन

शब्दार्थ - विद्या = कला, तमाशा = खेल, प्रारब्ध = भाग्य, धारणा = विचार, गुर = रहस्य, बहस = वाद - विवाद, खबर = जानकारी, रोब = ताव, शान, उस्ताद = गुरु, उधेड़बुन = ऊहापोह, बेबसी = लाचारी, लानत = धिक्कार, औरों = दूसरों, ओछापन = नीचता, पेशगी = अग्रिम, तसल्ली = भरोसा, हैरान = परेशान, नरम = कोमल, नामुराद = अभागा, पावन = पवित्र, थामना = पकड़ना, लहू = खून, फूले न समाना = प्रसन्न होना, फासला = दूरी, अल्टीमेटम = चेतावनी, जरा थोड़ा, डाँटना = धमकाना, शरारत = शैतानी, हाथ - पाँव फूलना = डर जाना, इलजाम = दोष, चकमा = धोखा, निरुत्तर = उत्तरविहीन ।

प्रश्नोत्तर → प्र० - साइकिल चलाने के बारे में लेखक की क्या धारणा थी? क्या यह धारणा सही थी? तर्क सहित उत्तर दीजिए ।

उत्तर - साइकिल चलाने के विषय में लेखक की धारणा थी कि साइकिल चलाना एक ऐसा गुण है, जिससे समय की बचत होती है। लेकिन लेखक को इस बात का दुःख है कि वह इस खूबी से अपरिचित है। इसलिए कहता है कि, "हमी जमाने भर में फिसड्डी रह गये हैं, जब छोटे - 2 लड़के, मूर्ख, गँवार सभी साइकिल चला लेते हैं। लेखक की यह धारणा ठीक नहीं थी कि जो साइकिल चलाते हैं, वे भाग्यवान होते हैं, क्योंकि इसमें किसी विशेष तकनीक की जरूरत नहीं होती है। साथ ही, किसी काम को सीखने की एक सीमा होती है, एवं समय होता है, लेखक इसका अतिक्रमण कर देता है, क्योंकि उसकी उम्र साइकिल चलाना सीखने की नहीं रह गई थी ।

प्र० - लेखक ने साइकिल चलाना सीखने के लिए कौन - कौन सी तैयारियाँ की?

उत्तर - लेखक ने साइकिल चलाना सीखने के लिए फटे - पुराने कपड़ों की तलाश की। उन पुराने कपड़ों की मरम्मत करायी। बाजार जाकर जंबक के दो डिब्बे खरीद लिए कि चोट लगने पर उसी समय इलाज किया जा सके। एक साइकिल की व्यवस्था की। खुला मैदान का तलाश किया तथा साइकिल चलाना सीखाने वाले एक उस्ताद को बीस रुपये अग्रिम भुगतान कर सिखाने के लिए तैयार कराया ।

प्र० - लेखक के झूठ की पोल कैसे खुल गई?

उत्तर - लेखक के झूठ की पोल तब खुल गई, जब वह एक ताँगे के नीचे आ गया तथा घायल हो गया। उस ताँगे पर उनकी पत्नी अपने बच्चों को लेकर घूमने निकली थी। लेखक सारा दोष तिवारीजी पर थोप स्वयं को निर्दोष साबित करना चाहते थे, लेकिन पत्नी के उत्तर से निरुत्तर होकर आँखें बंद कर ली, क्योंकि पत्नी के विरोध के बावजूद उन्होंने साइकिल चलाना सीखने की हठ की थी। पत्नी का उद्देश्य तो सैर करने के साथ - साथ लेखक को साइकिल चलाते हुए देखना भी था ।

प्र० - किसने किससे कहा - (क) "कितने दिन में सिखा देगा।" उत्तर - यह बात लेखक ने तिवारीजी से कही।

(ख) "नहीं सिखाया तो फीस लौटा देंगे।" उत्तर - यह बात लेखक ने उस्ताद से कही ।

(ग) "मुझे तो आशा नहीं है कि आपसे यह बेल मत्थे चढ़ सके।" उत्तर - यह बात लेखक की पत्नी ने लेखक से कही। (घ) "हम शहर के पास नहीं सीखेंगे। लारेंसबाग में जो मैदान है वहाँ सीखेंगे।" उत्तर - यह बात लेखक ने उस्ताद से कही ।

Scanned with CamScanner

व्याकरण (1)

शब्द -

अक्षरों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं। जैसे- घर, हवा, अग्नि इत्यादि।

उत्पत्ति के आधार पर शब्द के चार भेद होते हैं -

(i) तत्सम - संस्कृत के मूल शब्द को तत्सम शब्द कहते हैं। जैसे - अन्धु, अग्नि, पुष्प इत्यादि

(ii) तद्भव - संस्कृत शब्दों के बदले रूप को तद्भव शब्द कहते हैं। जैसे - आँसू, कपूर आदि

(iii) देशज - देशी भाषाओं के शब्द, देशज कहलाते हैं। जैसे - लोटा, डिबिया, आदि।

(iv) विदेशज - विदेशी भाषाओं के शब्द, विदेशज कहलाते हैं। जैसे - स्टेशन, इंजिनीयर इत्यादि।

रचना के आधार पर शब्द के तीन भेद होते हैं -

(i) रूढ़ शब्द - अपने-आप में पूर्ण शब्द जिसमें खंड नहीं होता, रूढ़ शब्द कहलाते हैं। जैसे - घर, नाक, हाथ आदि।

(ii) यौगिक - वैसे शब्द जिनका खंड करने पर सभी खंडों का अर्थ सार्थक होता है, उसे यौगिक शब्द कहते हैं। जैसे, हिमालय, विद्यार्थी इत्यादि

(iii) योगरूढ़ - वैसे शब्द जो अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर एक विशेष अर्थ बतलाते हैं, उसे योगरूढ़ शब्द कहते हैं। जैसे - पंकज, नीलकंठ, लम्बोदर इत्यादि।

रूपांतर की दृष्टि से शब्द के दो भेद होते हैं - (i) विकारी शब्द - वैसे शब्द जिनका रूप लिंग, वचन, पुरुष, कारक आदि के अनुसार बदलते हैं, उसे विकारी शब्द कहते हैं। जैसे - गाय, वह, हम इत्यादि।

(ii) अविकारी - वैसे शब्द जिनका रूप लिंग, वचन, पुरुष, कारक के अनुसार नहीं बदलते हैं, उसे अविकारी शब्द कहते हैं। जैसे - धीरे-धीरे, तथा, अचानक इत्यादि।

Scanned with CamScanner

अव्यय

जिस शब्द में किसी भी कारण से कोई परिवर्तन नहीं होता है, उसे अव्यय कहते हैं। जैसे- अभी, जब, तब इत्यादि।

अव्यय के चार भेद होते हैं-

(i) क्रिया-विशेषण - क्रिया की विशेषता बताने वाले अव्यय क्रिया-विशेषण अव्यय कहलाते हैं। जैसे - धीरे-धीरे, जल्दी, जोर से इत्यादि।

(ii) संबंधबोधक - संज्ञा के बाद आकर उसका संबंध वाक्य के दूसरे शब्द से बतलाने वाले अव्यय संबंध बोधक अव्यय कहलाते हैं। जैसे-बाद, निकट, अपेक्षा, पीछे इत्यादि।

(iii) समुच्चयबोधक - एक वाक्य या शब्द का संबंध दूसरे वाक्य से बतलाने वाले अव्यय, या जोड़ने वाले अव्यय समुच्चय बोधक अव्यय कहलाते हैं। जैसे - इसलिए, परन्तु और

(iv) विस्मयादि बोधक - जिन अव्ययों से हर्ष शोक आश्चर्य आदि के भाव सूचित होते हैं, परन्तु उन का संबंध वाक्य के किसी विशेष पद से नहीं होता, उसे विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं। जैसे - हाय, शाबाश, वाह इत्यादि।

उपसर्ग - वैसा शब्दांश जो किसी शब्द के पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देता है उसे उपसर्ग कहते हैं। जैसे - प्र + कार = प्रकार, अनुमान आदि।

प्रत्यय - वैसा शब्दांश जो किसी शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ को बदल देते हैं, उसे प्रत्यय कहते हैं। जैसे - दिन + इक = दैनिक, मम + ता = ममता आदि।

प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं-

(i) कृत प्रत्यय - धातु या क्रिया के अंत में लगने वाले प्रत्यय, कृत-प्रत्यय कहलाते हैं तथा इनसे बने शब्द कृदंत कहलाते हैं। जैसे, लिखाई = लिख + आई।

(ii) तद्धित प्रत्यय - जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण के अंत में जुड़ते हैं, उसे तद्धित प्रत्यय कहते हैं, इस प्रकार बने शब्द तद्धितांत कहलाते हैं। जैसे- लकड़ी + आरा = लकड़ारा, अपना + पन = अपनापन आदि।

Scanned with CamScanner

काल

क्रिया के उस रूप को काल कहते हैं, जिससे उसके कार्य-व्यापार का समय और उसकी पूर्ण अथवा अपूर्ण अवस्था का बोध होता है।

काल के भेद -

वर्तमान काल - जो समय अभी बीत रहा है उसे वर्तमान काल कहते हैं। जैसे- मैं पढ़ता हूँ।

वर्तमान काल के भेद -

(i) सामान्य वर्तमान काल - क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया का सामान्य रूप से सम्पन्न होने का बोध होता है, उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं, जैसे- वह आती है।

(ii) तात्कालिक वर्तमान - जिससे ज्ञात होता है कि क्रिया वर्तमानकाल में हो रही है, उसे तात्कालिक वर्तमानकाल कहते हैं। जैसे - वह जा रहा है।

(iii) पूर्ण वर्तमान - इससे वर्तमान में कार्य की पूर्ण सिद्धि का बोध होता है। जैसे - वह आया है।

(iv) संदिग्ध वर्तमान - जिससे क्रिया के होने में संदेह प्रकट हो, पर उसकी वर्तमानता में संदेह न हो, उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं। जैसे वह पढ़ता होगा।

(v) संभाव्य वर्तमान - जिससे वर्तमानकाल में काम के पूरा होने की संभावना रहती है, उसे संभाव्य वर्तमानकाल कहते हैं। जैसे - शायद, बारिश हो।

भूतकाल - बीते हुए समय को भूतकाल कहते हैं। जैसे - वह गया।

भूतकाल के भेद -

(i) सामान्य भूत - जिससे भूतकाल की क्रिया के सामान्य समय का ज्ञान न हो, उसे सामान्य भूत काल की क्रिया कहते हैं। जैसे - मोहन आया।

(ii) आसन्न भूत - इससे क्रिया की समाप्ति निकट भूत में या तत्काल ही सूचित होती है, उसे आसन्न भूत काल की क्रिया कहते हैं। जैसे- मैंने खाया है।

(iii) पूर्ण भूत - क्रिया के उस रूप को पूर्ण भूत कहते हैं, जिससे क्रिया की समाप्ति के समय

Scanned with CamScanner

स्पष्ट होता है। उसे पूर्णभूत काल की क्रिया कहते हैं। जैसे - वह आया था।

(iv) अपूर्ण भूत - इससे ज्ञात होता है कि क्रिया भूत काल में हो रही थी, लेकिन उसकी समाप्ति का पता नहीं चलता है। जैसे - गीता सो रही थी।

(v) संदिग्ध भूत - इससे यह संदेह बना रहता है कि भूतकाल में कार्य पूरा हुआ था या नहीं। जैसे - तुमने खाया होगा।

(vi) हेतुहेतुमद् भूत - इससे यह पता चलता है कि क्रिया भूतकाल में होनेवाली थी, परन्तु किसी कारणवश नहीं हो सकी। जैसे - मैं आता तो वह जाता।

भविष्यत्काल - भविष्य में होनेवाली क्रिया को भविष्यत्काल कहते हैं। जैसे - वह आयेगा।

भविष्यत्काल के भेद -

(i) सामान्य भविष्य - इससे प्रकट होता है कि क्रिया सामान्यतः भविष्य में होगी। जैसे - मैं पढ़ूँगा।

(ii) संभाव्य भविष्य - जिससे भविष्य में किसी कार्य के होने की संभावना हो, उसे संभाव्य भविष्यकाल कहते हैं। जैसे - रमेश कल आया।

(iii) हेतुहेतुमद् भविष्य - इसमें एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर करता है। जैसे वर्षा होगी तो फसल अच्छे होंगे।

Scanned with CamScanner

वर्ग - 7 वसंत - 2

हिन्दी (1)

5. मिठाईवाला

लेखक - भगवती प्रसाद वाजपेयी

शब्दार्थ - विचित्र = अनोखा, मादक = नशा उत्पन्न करने वाला, अस्थिर = चंचल, स्नेहाभिषिक्त = प्यार से सराबोर, कंठ = गला, फूटा हुआ = निकला हुआ, चिक = बाँस की तीलियों से बना झीना परदा, अंतर्व्यापी = अंदर तक फैला हुआ, पुलकित = खुश, इक्का = इक्का, औल = और, हिलोर = लहर, उस्ताद = गुरु, साफ़ा = पगड़ी, मृदुल = कोमल, एहसान = लादना = कृतज्ञता जताना, अप्रतिभ = उदास, दस्तूर = रिवाज, ठो = संख्यात्मक शब्दों के साथ लगने वाला एक अव्यय, लायक = उचित, तरकीब = उपाय, क्षीण = कमज़ोर, स्नेहसिक्त = प्रेम से भरपूर, स्मृति = याद, आजानुलंबित = घुटनों तक लंबे, केश-राशि = सिर के सुंदर बाल, जायकेदार = स्वादिष्ट, चाव = रुचि, सिवा = अलावा, पखलदार = मोटी परत वाली, पोपले = पिचका एवं सिकुड़ा हुआ, आड़ = परदा, हरजा = नुकसान, अतिशय = अत्यधिक वैभव = समृद्धि, तर = भीगी।

प्रश्नोत्तर —

प्र० - मिठाईवाला अलग-2 चीज़ें क्यों बेचता था और वह महीनों बाद क्यों आता था ?

उत्तर - मिठाईवाला अलग-2 चीज़ें इस-

फिर बेचता था, जिससे बच्चों और लोगों का उसके वस्तुओं के प्रति आकर्षण बना रहे। एक ही चीज को बार-2 खरीदने में बच्चों की रुचि नहीं होती। बच्चों को उनके माँ-बाप भी समझा देते हैं कि अभी कुछ दिन पहले ही तो तुमको यह सामान दिलाया था। बच्चों को वह वस्तु न मिलने पर वे रोते हैं। मिठाईवाला यह नहीं चाहता था कि बच्चे रोएँ या नाराज हों। वह महीनों बाद इसलिए आता था क्योंकि -

(क) उसका अपना दूसरा व्यापार भी था। बच्चों के लिए वह नई-2 वस्तुएँ बना कर बेचता था। नई वस्तुओं को बनाने में उसे समय लगाता था।

(ख) दूसरा कारण यह था कि वह दाम कमाने के लिए अपना सामान नहीं बेचता था, वह तो बस अपने बच्चों की झलक देखने के लिए उनको सस्ता सामान दिया करता था।

प्र० - मिठाईवाले में वे कौन से गुण थे जिसके कारण बच्चे तो बच्चे बड़े भी उसकी ओर खिंचे चले आते थे?

उत्तर - मिठाईवाले में कई गुण थे जो निम्न प्रकार थे -

(क) वह मधुर स्वर में गा-गाकर सामान बेचता था, जो कि दूसरे फेरी वालों से अलग था।

(ख) उसका स्वभाव अत्यंत विनम्र था।

Scanned with CamScanner

(ग) वह मृदुभाषी एवं सहनशील था।
(घ) पैसे न होने पर भी वह बच्चों को सामान दे दिया करता था।
(ङ) वह बच्चों की पसंद की नई-नई चीजें लाया करता था।

प्र० - विजय बाबू एक ग्राहक थे और मुरलीवाला एक विक्रेता। दोनों अपने-अपने पक्ष के समर्थन में क्या तर्क पेश करते हैं।

उत्तर - विजय बाबू मुरली खरीदना चाहते थे। वह मुरलीवाले से कहते कि उसे मुरली की कीमत कम करनी चाहिए। इस पर मुरलीवाला कहता कि वह कम कीमत पर मुरली बेच रहा है। विजय बाबू का कहना है कि सामान बेचने वाले झूठ बोलते हैं। इस पर मुरलीवाला कहता कि दुकानदार चाहे हानि उठाकर ही चीजें बेचे लेकिन ग्राहक हमेशा यही सोचते हैं कि दुकानदार उन्हें लूट रहा है।

प्र० - खिलौनेवाले के आने पर बच्चों की क्या प्रतिक्रिया होती थी?

उत्तर - खिलौनेवाले के आने पर बच्चों की प्रतिक्रिया -
(क) बच्चों में हलचल मच जाती थी।
(ख) वे अपने खेल छोड़कर घरों, गलियों तथा उद्यानों से बाहर आ जाते थे।
(ग) वे हाँफते-भागते जल्दी से जल्दी खिलौनेवाले के पास पहुँच जाना चाहते थे।

Scanned with CamScanner

(4) अपने माता-पिता से किसी न किसी तरह से पैसे ले लिया करते थे। (4)

(3) खिलौने वाले की मादक आवाज उन्हें बेकाबू बना देती थी।

(5) उसके पास आने की जल्दी में उन्हें अपनी गिरती टोपी, पार्क में छूटे जूते या कपड़ों का जरा भी ध्यान नहीं रहता था।

(6) वे अत्यंत खुश हो जाते थे।

प्र० - रोहिणी को मुरलीवाले के स्वर से खिलौनेवाले का स्मरण क्यों हो आया ?

उत्तर - रोहिणी को मुरलीवाले के स्वर से खिलौनेवाले का स्मरण इसलिए हो आया, क्योंकि मुरलीवाला भी खिलौनेवाले की तरह ही गा-गाकर मधुर स्वर में मुरली बेचा करता था।

प्र० - किसकी बात सुनकर मिठाईवाला भावुक हो गया था ? उसने इन व्यवसायों को अपनाने का क्या कारण बताया ?

उत्तर - रोहिणी की बात सुनकर मिठाईवाला भावुक हो गया था, उसने बताया कि उसके भी दो बच्चे थे जो अब इस दुनिया में नहीं रहे इसलिए उसने इस व्यवसाय को अपना लिया ताकि उसे अपने बच्चों की झलक दूसरों के बच्चों में मिल जाये।

प्र० - "अब इस बार ये पैसे न लूँगा" कहानी के अंत में मिठाईवाले ने ऐसा क्यों कहा ?

Scanned with CamScanner

उत्तर - मिठाईवाले के जीवन के विषय में कोई नहीं जानता था, उसने अपनी मार्मिक कहानी पहले किसी से नहीं कही थी, लेकिन रोहिणी द्वारा अपनेपन से किये गये, आग्रह के कारण वह अपना दुःख व्यक्त कर देता है। भावनाओं में बहकर वह अपने घर-परिवार के विषय में सबकुछ कह देता है। उसी समय रोहिणी के बच्चे आते हैं तो वह अपनी आँखों से उन्हें मिठाई देता है। उसे ऐसा लगता है कि इस थोड़े से समय में उस परिवार के साथ उसका कोई आत्मीय संबंध स्थापित हो गया है। इसलिए वह मिठाई के पैसे लेने से इनकार कर देता है।

प्र०- इस कहानी में रोहिणी चिक के पीछे से बात करती है। क्या आज भी औरतें चिक के पीछे से बात करती हैं? यदि करती हैं तो क्यों? आपकी राय में क्या यह सही है?

उत्तर - हाँ, आज भी ग्रामीण तथा पिछड़े इलाकों में औरतें परदे या चिक के पीछे से बात करती हैं। अपरिचित पुरुषों, गाँव-घर के बुजुर्गों से बातें करते समय वे परदा करती हैं। वे ऐसा शर्म, संकोच के साथ-2 सम्मान या प्रथा के कारण करती हैं। मेरी राय में ऐसा करना बिल्कुल अनुचित है क्योंकि ऐसी प्रथा स्त्रियों की स्वतंत्रता के हनन की द्योतक/प्रतीक है।

Scanned with CamScanner

प्र०- नगर में किसके आने का (6)
समाचार फैला था? लोग उसके बारे में क्या बातें कर रहे थे?
उत्तर - नगर में एक मुरली वाले के आने का समाचार फैला था। लोग बातें कर रहे थे कि मुरली बजाने में वह उस्ताद है। मुरली बजाकर और सुनाकर वह मुरली बेचता भी है और केवल दो-दो पैसे में, लोगों के लिए यह अचरज की बात थी और वे सोच रहे थे कि भला इतने कम पैसे में उसे क्या हासिल होता होगा।
प्र०- मुरलीवाला बच्चों से कैसे बात करता था?
उत्तर - मुरलीवाला बच्चों से अत्यंत स्नेहपूर्वक बात करता था। वह बड़े धीरज से बैठकर एक-एक बच्चे को उसकी पसंद की मुरली देता था। साथ ही वह बच्चों की माँ यानी से पैसे माँगने की कला भी सिखाता था। बच्चों से कभी वह अधिक पैसे नहीं लेता। अगर किसी बच्चे के पास पैसे नहीं होते थे, तो वह उन्हें मुफ्त में ही मुरली दे देता था।
प्र०- मिठाईवाले की मिठाइयों की क्या विशेषता थी?
उत्तर - मिठाइवाले के पास मिठाई चपटी, गोल एवं पहलदार गोलियाँ थीं। वे रंग-बिरंगी गोलियाँ खट्टी-मिट्ठी और जायकेदार लगती थी। वे जल्दी घुलती नहीं थी और बच्चे

देर तक चाव से इन्हें चूसते रहते थे। इन गुणों के अतिरिक्त ये खाँसी भी दूर करती थी।

प्र०- रोहिणी उस फेरीवाले के विषय में जानने को इतनी उत्सुक क्यों थी?

उत्तर- वह फेरीवाला बच्चों के साथ स्नेह से बात करता था। उसके व्यवहार में अपनत्व की भावना भरी थी। इन्हीं गुणों के कारण वह रोहिणी को भला व्यक्ति लगता था। वह खिलौने-मिठाई बेचा करता था और वह भी कम मूल्य पर। रोहिणी जानना चाहती थी कि आखिर वह कौन है और इस काम से उसे क्या लाभ मिलता है।

प्र०- फेरीवाले को क्या दुःख था? अपने दुःख से उबरने के लिए उसने क्या किया?

उत्तर- फेरीवाला अपने शहर का प्रतिष्ठित व्यक्ति था। उसका छोटा सा परिवार था, पत्नी थी, दो बच्चे थे। वह एक सुखी व्यक्ति की तरह जीवन व्यतीत कर रहा था परन्तु दुर्भाग्य हुआ कि उसकी पत्नी एवं बच्चे उसको अकेले छोड़कर चल बसे। फेरीवाले को दुःख की सीमा न रही। जीवन उसे बोझ लगने लगा। आखिकार दुःख को कम करने के लिए खिलौने, मिठाई, सुरमा जैसी बच्चों की पसंद चीजें लेकर गली-गली घूमने लगा। बच्चे उसे

देखते ही दौड़कर आते तथा उसे घेर लेते। वे अपनी तुतली जुबान में उससे बातें करते तथा पसंद की चीजें पाकर बच्चे खुश हो जाते। उन्हें हँसता-खेलता देख व उनकी बातों को सुनकर फेरीवाला निहाल हो जाता और अपना दुःख भूल जाता।

प्र०- खिलौनेवाला अपनी खिलौनों की पेटी कहाँ खोल देता था?

(क) गलियों में (ख) पार्क में
(ग) बच्चों के बिच (घ) लोगों के बिच

उत्तर - (ग)

प्र०- खिलौनेवाले का गाना गलीमें के मकानों में कैसे लहराता था?

(क) झील की तरह (ख) सागर की तरह
(ग) नदी की तरह (घ) तालाब की तरह

उत्तर - (ख)

प्र०- चुन्नू-मुन्नू ने कितने में खिलौने खरीदे?

(क) तीन पैसे में (ख) दो पैसे में
(ग) दो आने में (घ) तीन रु० में।

उत्तर - (ख)

प्र०- खिलौनेवाला मुरलियाँ बेचने कितने समय बाद उस नगर में आया?

(क) चार महीने बाद (ख) आठ महीने बाद (ग) एक साल बाद (घ) छः माह बाद।

उत्तर - (घ)

प्र०- मुरलीवाला इनमें से कौन सा साज़ बेचता था?

(क) जयपुरी (ख) जैसलमेरी (ग) बीकानेरी (घ) उदयपुरी।

उत्तर - (ग)

Scanned with CamScanner

6. रक्त और हमारा शरीर (5)

लेखक - यतीश अग्रवाल

शब्दार्थ - रक्त = खून, जाँच = परीक्षण, स्लाइड = काँच की पतली छोटी सी पट्टी, दूरदर्शक = खुर्दबीन, सूक्ष्मदर्शी जैसा यंत्र जिससे छोटी वस्तुओं को कई गुना बढ़ाकर देखते हैं, इशारे = संकेत, एनीमिया = खून की कमी से होनेवाली बीमारी, जिज्ञासा = जानने की इच्छा, भानुमती का पिटारा = अनेक वस्तुओं का संग्रह, फोकस = केन्द्र, बालूशाही = गोल, चपटी गुलाबी रंग की मिठाई, आहिस्ता = धीरे-धीरे, पौष्टिक = पोषण से युक्त, आहार = भोजन, उपयुक्त = उचित, त्वचा = खाल, चमड़ा, सहज = सरल, सोच में डूबना = विचार करना, धावा बोलना = हमला करना, दरार = खाली स्थान, लाभप्रद = लाभ पहुँचाने वाला, जरूरतमंद = जिसको जरूरत हो, आपातस्थिति = विपत्ति का समय, ब्लड-बैंक = रक्त कोष, निराधार = गलत, नियमित रूप से = निश्चित रूप से, पीठ ठोकना = शाबाशी देना।

प्रश्नोत्तर

प्र०- रक्त के बहाव को रोकने के लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर - रक्त के बहाव को रोकने के लिए घाव को साफ कपड़े से कसकर बाँध देना चाहिए ताकि दबाव पड़े तो रक्त का बहाव कम हो

आये। फिर भी रक्त का बहाव न रुके तो डॉक्टर से सम्पर्क करना चाहिये।

प्र० - खून को भानुमती का पिटारा क्यों कहा जाता है?

उत्तर - खून में बहुत सारी चीजें मौजूद रहती हैं, इसलिए इसे भानुमती का पिटारा कहा जाता है। खून के दो भाग होते हैं - (1) पहला भाग जो तरल रूप में होता है, उसे प्लाजमा कहते हैं। दूसरे छोटे-छोटे कण होते हैं, जो प्लाजमा में तैरते रहते हैं। कणों में लाल, सफेद तथा रंगहीन कण रहते हैं। ये रंगहीन कण बिंबाणु कहलाते हैं। रक्त की एक बूँद में इतनी सारी चीजें समाहित होने के कारण ही उसे भानुमती का पिटारा कहा जाता है।

प्र० - एनीमिया से बचने के लिए हमें क्या-क्या खाना चाहिए?

उत्तर - एनीमिया से बचने के लिए हमें ऐसा संतुलित और पौष्टिक भोजन लेना चाहिए, जिसमें सब्जी, दूध, अंडा और माँस शामिल हो।

प्र० - पेट में कीड़े क्यों हो जाते हैं इनसे कैसे बचा जा सकता है।

उत्तर - पेट में कीड़े कई कारणों से हो जाते हैं। प्रायः ये दूषित जल, और खाद्य पदार्थों द्वारा हमारे शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। अतः इनसे बचने के लिए पूरी सफाई से बनाए गये खाद्य-पदार्थ का सेवन

Scanned with CamScanner

करना चाहिए। साफ जल पीना चाहिए। भोजन करने से पहले हाथों को अच्छी तरह से धो लेना चाहिए। कुछ कीड़े ऐसे होते हैं जिनके अंडे से लार्वा त्वचा के रास्ते शरीर में प्रवेश कर जाते हैं तथा आँतों में अपना घर बना लेते हैं। इनसे बचने के लिए जरूरी है कि शौचालय का प्रयोग किया जाए और इधर-उधर नंगे पैर न घूमा जाए।

प्र०- रक्त के सफेद कणों को 'वीर सिपाही' क्यों कहा गया है?

उत्तर - रक्त के सफेद कण शरीर पर हमला करने वाले रोगाणुओं का डटकर सामना करते हैं। वे उन्हें शरीर में घर नहीं बनाने देते। इस प्रकार वे बहुत से रोगों से हमारी रक्षा करते हैं।

प्र०- ब्लड - बैंक में रक्तदान से क्या लाभ है?

उत्तर- ब्लड बैंक में रक्तदान से अनेक लाभ हैं -

(क) किसी भी व्यक्ति को उसी के समूह का रक्त आसानी से मिल जाता है।

(ख) आपातकाल में सुविधा से रक्त प्राप्त किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में रक्तदाता को खोजना नहीं पड़ेगा।

(ग) रक्त समूह की समस्या मरीज के इलाज के लिए बाधा नहीं बनेगी।

(घ) जाँच किया हुआ, रोगमुक्त रक्त मरीज को जल्द दिया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

(30) ब्लड बैंक में रक्त उचित उप- (2)
करणों द्वारा सुरक्षित रखा जाता है
जिसके कारण वह दूषित नहीं होता,
(ख) किसी जरूरतमंद व्यक्ति का
जीवन बचाया जा सकता है।

प्र०- साँस लेने पर शुद्ध वायु
से ऑक्सीजन प्राप्त होती है
उसे शरीर के हर हिस्से में कौन
पहुँचाता है ?
~~उत्तर - ऑक्सीजन को प्रत्येक~~
~~भाग में पहुँचाने में सफेद कण,~~
(क) सफेद कण (ख) लाल कण
(ग) साँसनली (घ) फेफड़े ।
उत्तर - लाल कण ।
प्र०- रक्त में हीमोग्लोबिन के
लिए किस खनिज की जरूरत
पड़ती है ?
(क) जस्ता (ख) शीशा (ग) लोहा
(घ) प्लैटिनम । उत्तर - (ग)
प्र०- बिंबाणु (प्लेटलेट कण) की
कमी किस बीमारी में पाई जाती है
(क) टाइफायड (ख) मलेरिया (ग) डेंगू
(घ) फाइलेरिया । उत्तर - डेंगू ।
प्र०- पिंकी अनिल के साथ अस
पताल क्यों गई ?
(क) थकान महसूस होने से
(ख) काम में मन न लगने से
(ग) भूख कम लगने से
(घ) उपर्युक्त सभी ।
उत्तर - (घ)
प्र०- डॉक्टर ने इलाज से पहले क्या
करना चाहा ?

Scanned with CamScanner

(क) वजन लेना
(ख) एक्स-रे कराना
(ग) खून की जाँच कराना
(घ) अल्ट्रासाउन्ड कराना
उत्तर - (ग)

प्र० - डॉक्टर स्लाइड की जाँच किस यंत्र द्वारा कर रही थीं?
(क) दूरदर्शी द्वारा (ख) सूक्ष्मदर्शी द्वारा
(ग) हैंडलेंस द्वारा (घ) दूरबीन द्वारा
उत्तर - (ख)

प्र० - डॉक्टर ने अनिल को बताया कि दिव्या को --- है?
(क) रतौंधी (ख) वायरल फीवर
(ग) निमोनिया (घ) एनीमिया
उत्तर - (घ)

प्र० - रक्त के तरल भाग को --- कहते हैं,
(क) लाल रक्त कण (ख) श्वेत रक्तकण
(ग) बिंबाणु (घ) प्लाज्मा।
उत्तर - (घ)

प्र० - डॉक्टर दीदी द्वारा रक्त की जाँच की पूरी प्रक्रिया अपने शब्दों में लिखो।
उत्तर - डॉक्टर दीदी ने सबसे पहले दिव्या की उँगुली से रक्त की कुछ बूँदें एक छोटी सी शीशी में डाल दीं और स्लाइड पर लगा दी। उस स्लाइड को सूक्ष्मदर्शी के नीचे रख कर उन्होंने उस पर लगी रक्त की दो बूँदों की जाँच की। जाँच पूरी होने पर उन्होंने साबुन से अपना हाथ धोया।

प्र० - रक्त के कौन कौन से विभिन्न हिस्से हैं ?

उत्तर - रक्त के दो भाग होते हैं :— ① इसका तरल भाग प्लाज्मा कहलाता है तथा दूसरा वह होता है जिसमें छोटे-बड़े असंख्य कण रहते हैं। ये कण तीन तरह के होते हैं- लाल, सफेद तथा रंगहीन। रंगहीन कणों को बिम्बाणु कहा जाता है।

प्र० - उचित आहार न लेने पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर - उचित आहार न लेने पर शरीर में पोषक तत्वों की कमी हो जाती है। फलस्वरूप नये रक्त कणों का निर्माण नहीं हो पाता है। इससे रक्त की कमी हो जाती है, जिसके कारण रक्ताल्पता होता है जो कई अन्य बीमारियों को जन्म देता है।

प्र० - रक्त चढ़ाते समय किस बात का ध्यान रखना चाहिये ?

उत्तर - प्रत्येक व्यक्ति का रक्त एक जैसा नहीं होता है, सबके रक्त समूह अलग होते हैं। केवल समान रक्त समूह वाला रक्त ही किसी व्यक्ति को चढ़ाया जा सकता है। अतः रक्त चढ़ाते समय इस बात का ध्यान रखना पड़ता है। इसके अलावे हर प्रकार से जाँच कराकर ही विशुद्ध रक्त

चढ़वाना चाहिए, जिससे (15)
दूषित रक्त किसी नई बीमारी
का कारण न बनने पाए।

प्र०- रक्त के विभिन्न कण शरीर में क्या कार्य करते हैं? बताएँ।

उत्तर- रक्त में० छोटे-बड़े कई तरह के कण होते हैं। जैसे कुछ लाल, सफेद तथा रंगहीन। रंगहीन कण बिंबाणु कहलाते हैं। रक्त की एक बूँद में लाल कणों की लाखों संख्या होती है। इसी कारण रक्त लाल दिखाई पड़ता है। ये लाल कण हमारे शरीर के लिए दिन-रात काम करते हैं। ये कण साँसों द्वारा ग्रहण की गई ऑक्सीजन को शरीर के विभिन्न हिस्सों तक पहुँचाने का काम करते हैं। रक्त में स्थित सफेद कण विभिन्न रोगाणुओं से हमारे शरीर की रक्षा करते हैं। बिंबाणु चोट लगने पर रक्त जमाव क्रिया में मदद करते हैं। रक्त के तरल भाग प्लाजमा में स्थित एक विशेष किस्म की प्रोटीन रक्तवाहिका की कटी-फटी दीवार में जाला बुन देती है। बिंबाणु इस जाले से चिपक जाते हैं, जिससे दीवार में पड़ी झिर भर जाती है तथा रक्त का बहना रुक जाता है।

7. पापा खो गए

लेखक - विजय तेंदुलकर

शब्दार्थ - पात्र - नाटक आदि में काम करनेवाले व्यक्ति, हड़बड़ी = जल्दबाजी, भंगिमा - शारीरिक मुद्रा, आकृति = तस्वीर, बोरियत = ऊबाऊ, आफत = मुसीबत, चुंगी = महसूल, अकड़ = ऐंठन, कायम = स्थिर, स्वभाव = प्रकृति, झेलना = सहन करना, जख्मी = घायल, गरूर = घमंड, उड़ गया = गायब हो गया, चरण = पैर, कविता की पंक्ति, कर्कश = कानों को चुभने वाली आवाज, फोकट = मुफ्त, होश ठिकाने लगाना = सही रास्ते पर लाना, कब्जा = अधिकार, मन बहलाना = मनोरंजन करना, गुप्त = छिपा हुआ, पेट में चूहे कूदना = जोर की भूख लगना, तलाश = खोज, मुमकिन = संभव, ओट = परदा, आड़, चौकस = सतर्क, दाल में काला नजर आना = कुछ गड़बड़ दिखाई देना, नासपीटे = एक प्रकार की गाली, गला रुँध जाना = भाव आवेश में मुँह से आवाज न निकलना, कल्पना = नई बात सोचना, घड़ी भर = थोड़े समय के लिए, अधखुली = आधी खुली हुई, गश्त लगाना = घूमना, यानि = मतलब, ठंडी लम्बी साँस लेना = आहें भरना, कमाल = अद्भुत, इर्द-गिर्द = चारो ओर, यत्न = प्रयास, दाद देना = प्रशंसा करना, निःस्तब्ध = शांत, चकमा देना = धोखा देना, संरक्षण = हिफाजत, भद्द उड़ाना = मजाक करना, खातिर = आवभगत, प्रेक्षकों = दर्शकों।

प्रश्नोत्तर -

प्र०- नाटक में आपको सबसे बुद्धिमान पात्र कौन लगा और क्यों ?

उत्तर - नाटक में सबसे बुद्धिमान पात्र कौआ

लगा क्योंकि वह उड़-उड़कर सारी दुनिया की खबर रखता था। उसे देश-दुनिया में घट रही घटनाओं की जानकारी थी अच्छे-बुरे की पहचान थी। अपनी सूझ-बूझ से वह बच्ची को दुष्ट व्यक्ति से बचाता है और फिर उसे सही सलामत उसके घर तक पहुँचाने की तरकीब भी वही सोचता है।

प्र० - पेड़ और खंभे में दोस्ती कैसे हुई?

उत्तर - खंभा शुरु में पेड़ से बात नहीं करता था। कई बार पेड़ ने उससे बात करने की कोशिश की, लेकिन अपनी अकड़ के कारण खंभे ने उसे कोई जवाब नहीं दिया। बाद में पेड़ ने भी उससे बोलना छोड़ दिया। फिर एक दिन घनघोर बारिश हुई। तेज हवा के कारण खंभा पेड़ के ऊपर जा गिरा, पेड़ को चोट लगी, फिर भी उसने खंभे को नीचे गिरने से बचा लिया। उसी दिन से दोनों में दोस्ती हो गई।

प्र० - लेटर-बॉक्स को सभी ताऊ कहकर क्यों पुकारते थे?

उत्तर - लेटरबॉक्स का रंग लाल होने के कारण उसे सभी लाल ताऊ कहकर पुकारते थे।

प्र० - लाल ताऊ किस प्रकार बाकी पात्रों से भिन्न है?

उत्तर - लाल ताऊ बाकी पात्रों से भिन्न है, क्योंकि वह पढ़ा-लिखा है। वह दूसरों की चिट्ठियाँ निकालकर पढ़ता है। वह मधुर आवाज में बात करता है। उसका रंग लाल है, इसलिए उसे लाल ताऊ कहा जाता है। नाटक के अंत में प्रेक्षकों से कहता है कि यदि इस लड़की के पापा मिल जाएँ तो उन्हें जल्दी यहाँ लाएँ।

प्र० - नाटक में बच्ची को बचाने वाले पात्रों में एक ही सजीव पात्र है, उसकी कौन-कौन सी बातें आपको मज़ेदार लगीं? लिखें।

उत्तर- नाटक में बच्ची को बचानेवाले (18)
पात्रों में कौआ ही सजीव पात्र है। लाल
ताऊ की भजनों की आवाज से जब रात में
उनकी नींद खुल जाती है तो उनका चिढ़
कर बोलना मजेदार लगा। वह अक्लमंद
भी है। दुष्ट आदमी से बच्ची को बचाने
के लिए वही सबसे पहले भूत-प्रेत चिल्ला
ता है। फिर बच्ची को उसके घर तक पहुँचा
ने की तरकीब भी वही सोचता है। उसी के
बचाने पर लाल ताऊ पोस्टर 'पापा खो
गए' लिखते हैं। अत: कौआ मुझे
बहुत मजेदार लगा।

प्र०- क्या वजह थी कि सभी पात्र मिलकर
भी लड़की को उसके घर नहीं पहुँचा पा
रहे थे?

उत्तर- लड़की को अपने घर का पता
मालूम नहीं था। उसे अपने पिता तथा
गली का नाम भी मालूम नहीं था। इस-
लिए सभी पात्र मिलकर भी उस लड़की
को उसके घर नहीं पहुँचा पाए।

प्र०- पेड़ के जन्म से लेकर अब तक उसके
जन्म स्थान में क्या बदलाव आया है?

उत्तर- पेड़ का जन्म समुद्र तट पर हुआ था।
उस समय वहाँ कोई और न था। पेड़
को बहुत अकेलापन महसूस होता था। बाद
में वहाँ खंभे को लाकर लगाया गया।
फिर लेटरबॉक्स और सिनेमा का पोस्टर
आया। इस प्रकार वहाँ धीरे-धीरे रौनक
आने लगी।

प्र०- लेटरबॉक्स को अपना महत्त्व क्यों
लगता है?

उत्तर- लेटरबॉक्स सब के चिट्ठी को
सँभालकर रखता था। किसी के गुप्त बात
को बाहर नहीं निकलने देता था। वह
स्वयं भले ही किसी की चिट्ठी खोलकर
पढ़ लेता लेकिन चिट्ठी की बातें किसी दूसरे

तक नहीं पहुँचने देता था। यही कारण है कि उसे अपना महत्व बहुत ज्यादा है।

प्र० - खंभा जमीन पर कैसे बैठता है?

उत्तर - बच्ची खंभा के नीचे बैठने की जिद करती है तो पेड़ उसे बताता है कि खंभे से बिल्कुल बैठा नहीं जाता। वह हमेशा खड़ा ही रहता है, यह सुनकर बच्ची को आश्चर्य होता है। वह कहती है कि हम सब मिलकर खंभे को बैठाएँगे। सब मिलकर बड़े यत्न से खंभे को बैठाते हैं। उसे बैठाने में बहुत तकलीफ होती है, लेकिन धीरे-धीरे वह बैठ जाता है।

प्र० - बैठने पर खंभे की क्या प्रतिक्रिया होती है?

उत्तर - बैठने पर खंभा अच्छा महसूस करता है क्योंकि पहली बार उसे जीवन में बैठने का अवसर मिला था। वह कहता है कि बैठकर उसे बहुत अच्छा लग रहा है। जब वह खड़ा था तो बैठने के सपने देखा करता था, सपने में भी बैठना उसे बहुत पसंद था।

प्र० - लड़की को घर पहुँचाने के लिए क्या तरकीब सोची गई?

उत्तर - लड़की जब थककर सो गई तो सभी सोचने लगे कि उसे सुरक्षित उसके घर कैसे पहुँचाया जाए। कौए को एक तरकीब सूझती है। वह पेड़ से कहता है कि सुबह होने तक आप उस पर अपनी छाया बनाये रखना। वह देर तक सोती रहेगी। फिर खंभा को टेढ़ा होकर खड़ा होने की सलाह देता है। उसके टेढ़ा होने से पुलिस को लगेगा कि ऐक्सीडेंट हो गया। पुलिस आएगी, बच्ची को देखेगी तथा वह उसके घर पहुँचा देगी।

प्र० - खंभा, पेड़, लैटरबॉक्स सभी एक साथ कहाँ थे?

(क) नदी के किनारे (ख) झील के किनारे

Scanned with CamScanner

(ग) सड़क से बहुत दूर (घ) समुद्र के किनारे।
उत्तर - (घ)

प्र० - 'दिन तो कैसे न कैसे हड़बड़ी में बीत जाता है' वाक्य से किस ऋतु का संकेत मिलता है ?

(क) वसंत ऋतु (ख) शिशिर ऋतु
(ग) वर्षा ऋतु (घ) ग्रीष्म ऋतु ।

उत्तर - (ख)

प्र० - 'इस परीक्षित के होश तब में अच्छी तरह ठिकाने लगाता' - ऐसा किसने कहा था ?

(क) खंभे ने (ख) परीक्षित के पिता ने
(ग) लेटरबॉक्स ने (घ) परीक्षित के अध्यापक ने,

उत्तर - (ग)

प्र० - खंभे को कौन सी रातें अच्छी नहीं लगती हैं ?

(क) बरसात की रातें (ख) गर्मी की रातें
(ग) शरद ऋतु की रातें (घ) वसंत ऋतु की रातें

उत्तर - (क)

प्र० - आसमान से गड़गड़ाती बिजली किस पर आ गिरी थी ?

(क) खंभे पर (ख) पेड़ पर
(ग) लेटरबॉक्स पर (घ) पोस्टर पर ।

उत्तर - (ख)

Scanned with CamScanner